हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 8

हिन्दी व्याकरण एवं रचना कक्षा - 8

अध्याय-1 संज्ञा

1. **क.** (अ) **ख.** (स) **ग.** (द) **घ.** (अ) **ङ.** (ब) **च.** (स)

2. **संज्ञा**—किसी प्राणी, वस्तु, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। उदाहरण—राम, श्याम, आगरा आदि।

3. संज्ञा के तीन भेद होते हैं—(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा (ii) जातिवाचक संज्ञा (iii) भाववाचक संज्ञा।

4. जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं—(i) द्रव्यवाचक संज्ञा (ii) समूहवाचक संज्ञा।

5. **जातिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सामूहिकता या वर्ग का बोध होता है, वे जातिवाचक संज्ञा शब्द कहलाते हैं।
उदाहरण—1. शहरों की गंदगी बढ़ती जा रही है। 2. कलम मेज पर है।

6. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का ज्ञान होता है, उन शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—कुतुबमीनार, क्रिकेट, महात्मा गाँधी।

7. **भाववाचक संज्ञा**— जिन संज्ञा शब्दों के द्वारा प्राणियों, वस्तुओं तथा स्थानों के गुण, दोष, धर्म, दशा, मनोभाव, कार्य आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। सामान्यत: गुण, प्रकृति, अवस्था, क्रिया-कलाप के मूल रूप भाववाचक संज्ञा में सम्मिलित किए जाते हैं। जैसे— लम्बाई, वृद्धावस्था, जवानी, नम्रता, क्रोध, मिठास, ठंडक, दया, करुणा, शत्रुता, मित्रता आदि।

8. (क) लालिमा (ख) हरीतिमा (ग) सुंदरता (घ) स्वास्थ्य।

9. (क) अपनापन (ख) परायापन (ग) ममत्व (घ) निजता।

10. (क) मनुष्यता (ख) जवानी (ग) वकालत (घ) लड़कपन।

11. (क) मिठास (ख) अपनापन (ग) पढ़ाई (घ) बुढ़ापा।

12. (क) कृपणता (ख) बचपन (ग) शूरता (घ) रौद्र।

13. (क) पंकज—व्यक्तिवाचक संज्ञा, छात्र— जातिवाचक संज्ञा।
(ख) गंगा— व्यक्तिवाचक संज्ञा, नदी— जातिवाचक संज्ञा।

14. व्यक्तिवाचक संज्ञा— भास्कर, भारत।
जातिवाचक संज्ञा— नदीश, गिरि, वन, देश, विश्वए ललाट।
भाववाचक संज्ञा— एकता, मन, शांति, प्रेम।

15. (क) पंडित जी— व्यक्तिवाचक संज्ञा।
(ख) कौटिल्य— जातिवाचक संज्ञा।
(ग) माहिल— जातिवाचक संज्ञा।
(घ) राजपूत— भाववाचक संज्ञा।

16. (i) अंशिका, सौभाग्य एवं वंश पढ़ाई में होशियार हैं।
(ii) दिल्ली, मुंबई और कोलकाता बड़े नगर हैं।
(iii) चीन, पाकिस्तान भारत के पड़ोसी देश हैं।

17. (i) सुलभ के व्यवहार में नम्रता और मधुरता है।
(ii) बुद्ध दया, करुणा के अवतार थे।
(iii) शत्रुता और मित्रता बढ़ाने से बढ़ती है।

18. (i) फसलों को टिड्डी दल खा गया।
(ii) सुंदरवन में जानवरों की सभा हुई।
(iii) बंदरों की भीड़ ने बगीचे में धावा बोल दिया।
(iv) कृत्रिम उपग्रह कक्षा में स्थापित हो गया।

अध्याय–2 सर्वनाम, लिंग, वचन एवं कारक

1. **क.** (अ) छह **ख.** (अ) स्त्रीलिंग **ग.** (स) कविताएँ।
2. **क.** उसका **ख.** अपने **ग.** तुम्हारी **घ.** उन्हें।
3. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द, सर्वनाम शब्द कहलाते हैं। जैसे—उसकी, मुझे, वह, तुम, कोई आदि।
4. सर्वनाम के छह प्रमुख भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	— मुझे	2. निश्चयवाचक सर्वनाम	— यह
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	— कुछ	4. संबंधवाचक सर्वनाम	— जिसकी
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम	— किसे	6. निजवाचक सर्वनाम	— स्वयं

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम
7. निजवाचक सर्वनाम (जब कर्ता स्वयं के लिए करता है।)
8. बहुवचन— आप कहाँ से आए हैं?
9. वाक्य में संज्ञा के दोहराव से बचने के लिए सर्वनाम शब्द प्रयोग होते हैं। भाषा को सहज और प्रभावी बनाने के लिए, लेखन को अधिक आकर्षक बनाने के लिए तथा वाक्य को छोटा और संक्षिप्त बनाने के लिए सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है।
10. (क) मुझे तुम्हारे घर जाना है।
(ख) जिस आदमी ने तुम्हें देखा था, वह चला गया।
(ग) तुम्हें मेरी माताजी बुला रही हैं।
(घ) मुझे आज खाना नहीं खाना है।
(ङ) जिसने खाना खाया, वही पैसा देगा।
(च) मेरी बात का पता किसी को नहीं चले।
11. (क) जो (ख) स्वयं (ग) जहाँ (घ) आप (ङ) मुझे (च) जो, वह
12. (क) स्वयं— निजवाचक (ख) मेरी— निजवाचक, कौन सी— प्रश्नवाचक
(ग) जो, सो— संबंधवाचक (घ) कोई— अनिश्चयवाचक (ङ) यह— निश्चयवाचक, हमारा— निजवाचक
13. **परिभाषा**— लिंग शब्दों के वे रूप हैं जिनके द्वारा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों की स्त्री या पुरुष जाति का बोध होता है।
14. हिंदी भाषा में लिंग दो प्रकार के होते हैं-
1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग
15. सदैव पुल्लिंग— तोता, मच्छर, खटमल, झींगुर, बिच्छू।
16. (क) साध्वी (ख) स्त्री (ग) कवयित्री (घ) कुमारी (ङ) मालिन (च) सेविका (छ) विधवा (ज) विदुषी
17. (क) रोटियाँ किसने खाईं? (ख) यहाँ गुड़ियाँ बेची जाती हैं।
(ग) मिठाइयों पर मक्खियाँ बैठी हैं। (घ) उल्लू अँधेरे में भी देख सकते हैं।
(ङ) भेड़ें मैदान में चर रही हैं। (च) ये लड़कियाँ अच्छा खेलती हैं।
(छ) नानी ने मुझे कहानियाँ सुनाईं।

18. (क) से– अपादान कारक (ख) का– संबंध कारक
(ग) पर– अधिकरण कारक (घ) से– अपादान कारक
(ङ) से– अपादान कारक (च) से– करण कारक
(छ) की– संबंध कारक (ज) ने– संबंध कारक

19. **करण कारक**– वाक्य में क्रिया को संपन्न करने के लिए जिस साधन का प्रयोग किया जाता है, वह करण कारक कहलाता है। उसका परसर्ग 'से' अथवा 'के द्वारा' होता है, किंतु यह बिना परसर्ग के भी लिखा और बोला जाता है। जैसे– राम प्रतिदिन गेंद से खेलता है।

20. (क) जंगल में अनेक मोर थे। (ख) उन साधुओं को भोजन कराओ। (ग) मुझको किसने बुलाया। (घ) यह पुस्तक अभी तक यहीं पड़ी है। (ङ) डॉक्टर से मरीज के लिए दवा लाओ।

अध्याय–3 विशेषण

1. **क.** (अ) **ख.** (स) **ग.** (द) **घ.** (स) **ङ.** (ब)
2. **क.** (ब) **ख.** (अ) **ग.** (स) **घ.** (अ) **ङ.** (द)
3. **क.** दयालु **ख.** धार्मिक **ग.** ऐतिहासिक **घ.** लंबाई **ङ.** ममेरा **च.** गर्म **छ.** रक्षक
4. **विशेषण**– संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की विशेषता प्रकट करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
5. **गुणवाचक विशेषण**– जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के गुण, दोष, दशा, स्वभाव, रंग, अवस्था, आकार आदि का बोध होता है, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।
6. **परिमाणवाचक विशेषण**– जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों के परिमाण (नाप, तोल आदि) का बोध होता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।
7. **संख्यावाचक विशेषण**– जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–पाँच आम, कुछ घोड़े, तीसरा मकान, सारे लड़के आदि।
8. (क) विशेषण– ऊँची, विशेष्य– दुकान। विशेषण– फीके, विशेष्य– पकवान।
(ख) विशेषण– नीली, विशेष्य– घोड़ी। विशेषण– लाल, विशेष्य– लगाम।
9. (क) लीटर (ख) किलो (ग) थोड़ी-सी (घ) दो मीटर (ङ) कुछ (च) थोड़ा-सा (छ) कम (ज) किलो
10.

	विशेषण	**भेद**	**संबंधित विशेष्य**
(क)	गहन	गुणवाचक	अंधकार
(ख)	दर्शनीय	गुणवाचक	स्थल
(ग)	थोड़ा सा	अनिश्चय परिमाणवाचक	घी
(घ)	एक	संख्यावाचक	फूल
(ङ)	मनोरंजक	गुणवाचक	कहानी
(च)	एक दर्जन	संख्यावाचक	केले

11. (क) यह, हमारी (ख) वह, किसका (ग) उस, कोई (घ) वह, तुम्हारा (ङ) यह, इसे
12. तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–
1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था
13. (क) अच्छा– अधिक अच्छा, बहुत अच्छा
(ख) मधुर– मधुरतर, मधुरतम
(ग) गुरु– गुरुतर, गुरुतम

(घ) बुरा– अधिक बुरा, बहुत बुरा

(ङ) निम्न– निम्नतर, निम्नतम

(च) श्रेष्ठ– श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम

अध्याय–4 क्रिया, वाच्य एवं काल

1. **क.** (द) **ख.** (द) **ग.** (अ) **घ.** (स) **ङ.** (अ) **च.** (अ) **छ.** (स) **ज.** (द) **झ.** (अ) **ञ.** (ब)
2. रोती है–अकर्मक क्रिया।
3. खेलता है।
4. सुन लो–सकर्मक क्रिया।
5. प्रेरणार्थक क्रिया।
6. करते जाओ।
7. **सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में अंतर**–जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित न हो, अकर्मक क्रिया कहते हैं, जबकि वह क्रिया जिसमें कर्म उपस्थित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।
8. सामान्य क्रिया एक ही क्रियापद से बनी होती है, जबकि संयुक्त क्रिया दो या दो से अधिक क्रियापदों के योग से बनती है।
9. **नामधातु क्रिया**– क्रिया की रचना के अलावा, धातुओं में प्रत्यय जोड़ने पर अन्य जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रिया कहते हैं।
10. प्रेरणार्थक क्रिया में, कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी और को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, जबकि नामधातु क्रिया संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों से बनती है।
11. **वाच्य**–क्रिया का वह रूप जो कर्त्ता, कर्म, भाव के अनुसार परिवर्तित होता है, वाच्य कहलाता है।
    जैसे– राम पढ़ाई करता है। इस वाक्य में क्रिया कर्त्ता के अनुसार परिवर्तित होती है।
    वाच्य के तीन भेद होते हैं– कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य, भाववाच्य।
12. **कर्तृवाच्य**–क्रिया के जिस रूप से पता चले कि वह (क्रिया) कर्ता के अनुसार परिवर्तित होती है कर्तृवाच्य कहलाती है। जैसे– यशिका गा रही है।
13. **कर्मवाच्य**–कर्म के लिंग एवं वचन के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तन को कर्मवाच्य कहते हैं।
    जैसे– मेरी पुस्तक चुरा ली गई।
14. **भाववाच्य**–भाव के अनुसार क्रिया में होने वाले परिवर्तन को भाववाच्य कहते हैं। जैसे– उससे पढ़ा नहीं जा रहा है।
15. (अ) सामान्य क्रिया (ब) संयुक्त क्रिया (स) पूर्वकालिक क्रिया (द) संयुक्त क्रिया (य) प्रेरणार्थक क्रिया (र) पूर्वकालिक क्रिया (ल) संयुक्त क्रिया (व) पूर्वकालिक क्रिया (श) संयुक्त क्रिया (ष) प्रेरणार्थक क्रिया।
16. (क) मजदूर द्वारा लकड़ी काटी जाती है।
    (ख) नूपुर द्वारा फूल तोड़े जाएँगे।
    (ग) माला द्वारा खाना खाया गया।
    (घ) हमारे द्वारा भगतसिंह नहीं भुलाये जा सकते।
    (ङ) मुझसे पत्र नहीं पढ़ा जाता है।
    (च) चोरों को पुलिस द्वारा पकड़ा गया।
17. (क) वह गीत गाएगा।
    (ख) अध्यापक ने अंग्रेजी नहीं पढ़ाई थी।

(ग) अध्यापक ने बच्चों को पीटा।
(घ) किसान ने खेत नहीं जोते।
(ङ) सुहेल ने वस्तुएँ चोरी कीं।

18. (क) मैं चल नहीं सकता हूँ।
(ख) रानी नहीं गाती है।
(ग) मैं कष्ट नहीं सह सकता हूँ।
(घ) मदन चित्र नहीं बनाता है।
(ङ) राम पढ़ नहीं रहा है।
(च) मैं नहीं करूँगा।

अध्याय–5 उपसर्ग

1. **क.** (ब) **ख.** (द) **ग.** (द) **घ.** (ब) **ङ.** (ब) **च.** (ब) **छ.** (स) **ज.** (ब) **झ.** (अ) **ञ.** (अ)
2. **क.** अनुदेश **ख.** सहयोग **ग.** सहयोग **घ.** सहायता।
3. **उपसर्ग**—वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व आकर जुड़ते हैं और उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं। उपसर्ग मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं— (i) संस्कृत उपसर्ग (ii) हिन्दी उपसर्ग (iii) आगत उपसर्ग (iv) संस्कृत के अव्यय।
4. उपसर्ग का भाषा में बहुत महत्व है। उपसर्ग शब्दों के अर्थ को विस्तृत करता है, नए शब्द बनाता है और भाषा को अधिक प्रभावी बनाता है। जैसे— प्र + हार = प्रहार। अनु + करण = अनुकरण।
5. विदेशी उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो हिंदी भाषा में विदेशी भाषाओं, जैसे कि अरबी, फारसी, उर्दू और अंग्रेजी से आए हैं और किसी शब्द के आगे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं। जैसे— बे, गैर। बे + वफा = बेवफा, गैर + कानूनी = गैरकानूनी।
6. संस्कृत भाषा के चार अव्यय जो उपसर्ग के रूप में हिंदी भाषा में प्रयोग होते हैं— अध:, बहिर्, सत्, पुरा।
अर्थ और उनसे निर्मित दो शब्द
अध:— नीचे — अध:पतन, अधोगति।
बहिर्— बाहर— बहिर्गमन, बहिर्जगत।
सत्— श्रेष्ठ— सज्जन, सत्कर्म।
पुरा— प्राचीन— पुराकाल, पुरातन।

7.

अ	= अबोध, अमल	अति	= अतिशय, अत्यधिक
अध	= अधपका, अधभुना	निर्	= निराकरण, निर्वाह
निस्	= निस्सार, निस्तेज	उन	= उन्नीस, उनसठ
खुश	= खुशबू, खुशदिल	दुर्	= दुर्बल, दुर्लभ
दुस्	= दुस्साहस, दुष्कर्म	परा	= पराजय, पराक्रम

8.

अनंत	= अन + अंत	परीक्षा	= परि + ईक्षा
प्रोज्ज्वल	= प्र + ज्वल	अनुपयोग	= अन + उपयोग
नीरोग	= नि + रोग	संकल्प	= सम् + कल्प
नास्तिक	= न + आस्तिक	परिच्छेद	= परि + छेद

अध्याय–6 प्रत्यय

1. **क.** (स) **ख.** (ब) **ग.** (अ) **घ.** (ब) **ङ.** (ब) **च.** (ब) **छ.** (स) **ज.** (द) **झ.** (द) **ञ.** (स)
2. **क.** आबादी **ख.** गरीबी **ग.** धोखेबाज **घ.** भिखारी **ङ.** लड़ाई
3. **परिभाषा—** वे शब्दांश जो किसी शब्द के अंत में जुड़कर नयी विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, **प्रत्यय** कहलाते हैं। जैसे— 'हिरन' शब्द में 'ई' प्रत्यय जोड़ने पर हिरनी बनता है, जो मूल शब्द का उल्टा अर्थ देता है। इसी प्रकार बल शब्द में 'हीन' प्रत्यय जोड़ने पर विपरीतार्थक शब्द बलहीन प्राप्त होता है।
   प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं— 1. कृत् प्रत्यय तथा 2. तद्धित प्रत्यय।
4. भाषा में प्रत्यय का बहुत महत्व है। प्रत्यय, जो शब्द के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, भाषा को समृद्ध और अर्थपूर्ण बनाते हैं। प्रत्यय, भाषा को न केवल अधिक विस्तृत और प्रभावी बनाते हैं, बल्कि शब्दों के अर्थ को गहराई और विशिष्टता भी प्रदान करते हैं। जैसे— कला + कार = कलाकार। सुंदर + ता = सुंदरता।
5. **क.** पन **ख.** इत **ग.** हारा **घ.** गार **ङ.** आई **च.** आइन
6. (क) त्व— लघुत्व, गुरुत्व (ख) गीर— दावागीर, दामनगीर
   (ग) आनी— सेठानी, नौकरानी (घ) इया— बढ़िया, घटिया
   (ङ) ईय— राष्ट्रीय, जातीय (च) ऐला— रंगीला, बर्फीला
   (छ) आवट— सजावट, कसावट (ज) ता— सफलता, सुंदरता
   (झ) औती— बपौती, मनौती (ञ) आहट— घबराहट, कड़वाहट
7.

	शब्द	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**
(क)	वैज्ञानिक	वि	इक
(ख)	बेरोजगारी	बे	गारी
(ग)	अमानवीय	अ	ईय
(घ)	निर्बलता	निर्	ता
(ङ)	अनगढपन	अन	पन
(च)	अपमानित	अप	इत
(छ)	असामाजिक	अ	इक

8. (क) दार, ई (ख) साज, ई (ग) आवट, ई (घ) ईय, ता (ङ) इक, ता
9.

	शब्द	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**
(क)	निरीह	निर्	—	ईह
(ख)	भावित	—	इत	भाव
(ग)	आर्थिक	—	इक	अर्थ
(घ)	उपहार	उप	—	हार
(ङ)	अनंत	अन	—	अंत
(च)	पौराणिक	—	इक	पुराण
(छ)	गौरव	—	अ	गुरु
(ज)	अत्यंत	अति	—	अंत
(झ)	अध्यादेश	अधि	—	आदेश
(ञ)	पाठक	—	अक	पठ्
(ट)	आध्यात्मिक	अधि	इक	आत्मन्

(ठ)	न्यून	नि	—	ऊन
(ड)	निर्धन	निर्	—	धन
(ढ)	यौगिक	इक	—	योग
(ण)	संसार	सम्	—	सार
(त)	बालक	—	क	बाल
(थ)	प्रशासन	प्र	—	शासन
(द)	दूरी	—	ई	दूर
(ध)	अप्रिय	अ	—	प्रिय
(न)	वृद्धा	—	आ	वृद्ध
(प)	नैतिक	—	इक	नीति
(फ)	आहार	अ	—	हार
(व)	पढ़ना	—	ना	पढ़
(भ)	निर्बल	निर्	—	बल
(म)	विदित	वि	इत	विद

10. (क) अमेरिकन — अमेरिका — इन
(ख) सिल्की — सिल्क — ई
(ग) फ्यूनाल — फ्यूनर — ल
(घ) यूरोपियन — यूरोप — इयन
(ङ) हिंदुइज्म — हिंदु — इज्म
(च) सोशलिस्ट — सोशल — इस्ट

11. अभिमानी, अपमानित, परिपूर्णता, बदचलनी, निर्दयी, अनजाना, सुलभता, नियुक्ति, प्रलयकारी, दुस्साहसी।

अध्याय–7 अव्यय

1. **क.** (ब) **ख.** (अ) **ग.** (अ) **घ.** (ब) **ङ.** (द) **च.** (स)
2. **क.** (स) **ख.** (द) **ग.** (ब) **घ.** (ब) **ङ.** (अ) **च.** (ब)
3. **क.** ओर **ख.** ही **ग.** सही **घ.** के पास **ङ.** बहुत **च.** अतः **छ.** तक **ज.** में **झ.** इसलिए **ञ.** लेकिन, नहीं जाएगा।
4. **वाक्य**— तुम आज दिनभर सोते ही रहोगे।
5. वह इतनी तेजी से दौड़ा मानो उसके पीछे शेर दौड़ रहा हो।
6. 'के पश्चात' एक संबंधबोधक अव्यय है। वाक्य— भोजन के पश्चात् हम घूमने गए।
7. **परिमाणवाचक अव्यय**— थोड़ा-सा। वाक्य प्रयोग— मेहमानों ने थोड़ा-सा खाया।
8. प्रेम— प्रेमपूर्वक, दिन— दिनभर, स्वभाव— स्वाभाविक, शक्ति— शक्तिपूर्वक।
9. **परिभाषा—** वे शब्द जिनमें लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के कारण कोई विकार नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं। जैसे—इधर, उधर, आज, तेजी से, धीरे-धीरे आदि।
अव्यय के भेद— अव्यय के निम्नलिखित पाँच भेद हैं—
1. क्रिया-विशेषण 2. सम्बन्धबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक 5. निपात ।
10. जो अव्यय (अविकारी) शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के पश्चात् प्रयुक्त होकर वाक्य में अन्य शब्दों से उसका संबंध स्थापित करते हैं, संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं। संबंधबोधक अव्यय के दो रूप होते हैं—

(क) परसर्ग सहित; जैसे– के अंदर।
(ख) परसर्ग रहित; जैसे– भर, मात्रा।

11. **परिभाषा–** वे अव्यय (अविकारी) शब्द, जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद–

(i) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (ii) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
(iii) कालवाचक क्रिया-विशेषण (iv) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

12. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**– इसके चार उपभेद हैं–

(i) **संयोजक**– और, एवं, व, तथा आदि। जैसे–
राम और श्याम चाचा-भतीजे हैं। तुम भी चलोगे तथा राम भी चलेगा। शीलू यहाँ आयी एवं दिनभर रही।

(ii) **विभाजक**– या, चाहे, अथवा, किंतु, नहीं तो आदि। जैसे– या तो शांति से बैठो या चले जाओ। चाहे यहाँ रहो चाहे वहाँ। समय का पालन करो नहीं तो नौकरी खो दोगे।

(iii) **विरोधसूचक**– लेकिन, पर, परंतु, किन्तु, अगर, मगर। जैसे– मैं तो पास हो जाऊँगा लेकिन तुम्हारा क्या होगा? मैं पहुँचूँगा मगर देर से। भोजन सादा था किंतु मजा आ गया।

(iv) **परिणामसूचक**– इसलिए, अतः, अतएव आदि। जैसे–मैं बीमार था इसलिए न आ सका। सभी चले गए थे, अतः सभा समाप्त हो गई। तुम दुष्ट हो, अतएव यहाँ नहीं रह सकते।

13. हर्षसूचक– धन्य भाग! जो आप हमारे यहाँ पधारे।
शोकसूचक– हाय! मैं बर्बाद हो गया।
विस्मयसूचक– अरे! आप अचानक कैसे आ गए?
तिरस्कारसूचक– छिः! सारे कपड़े गंदे कर दिए।

14. (क) संयोजक (और, तथा)– राम और श्याम चाचा-भतीजे हैं। तुम भी चलोगे तथा राम भी चलेगा।

(ख) विरोधसूचक (लेकिन, किंतु) मैं तो पास हो जाऊँगा लेकिन तुम्हारा क्या होगा? भोजन सादा था किंतु मजा आ गया।

(ग) विभाजन (अन्यथा, चाहे)– या तो शांति से बैठो, अन्यथा चले-जाओ। चाहे यहाँ रहो, चाहे वहाँ, समय का पालन करो।

(घ) परिणामसूचक (इसलिए, अतः)– मैं बीमार था इसलिए न आ सका। सभी चले गए थे, अतः सभा समाप्त हो गई।

अध्याय–8 संधि

1. **क.** (अ) **ख.** (स) **ग.** (ब) **घ.** (स) **ङ.** (स) **च.** (ब) **छ.** (स) **ज.** (अ) **झ.** (द) **ञ.** (अ) **ट.** (अ) **ठ.** (ब) **ड.** (ब) **ढ.** (स) **ण.** (स) **त.** (स) **थ.** (स) **द.** (स) **ध.** (अ) **न.** (द)

2. **क.** अनु + एषण **ख.** विसर्ग **ग.** अधि + ईश **घ.** आत्मोत्सर्ग **ङ.** अ और उ

3. (क) उपदेशांत = उपदेश + अंत (ख) एकैक = एक + एक
(ग) उन्मत्त = उत् + मत्त (घ) दुश्शासन = दुः + शासन
(ङ) आच्छादन = आ + छादन (च) गुर्वादेश = गुरु + आदेश
(छ) निराशा = निः + आशा (ज) स्वागतम् = सु + आगतम्
(झ) योजनावधि = योजन + अवधि (ञ) अण्डाकार = अण्ड + आकार
(ट) अधोगति = अधः + गति (ठ) आध्यात्मिक = अधि + आत्मिक

(ड) नरोत्तम = नर + उत्तम	(ध) तथास्तु = तथा + अस्तु
(ण) विद्योत्तमा = विद्या + उत्तमा	(त) कूर्मावतार = कूर्म + अवतार
(थ) दुर्गम = दुः + गम	(द) युगानुसार = युग + अनुसार
(ध) आशोन्मुख = आशा + उन्मुख	

4. **क.** परमाणु **ख.** रेखांश **ग.** अधीश **घ.** नारीन्दु
ङ. नारीश्वर **च.** योगेश्वर **छ.** बहुद्देशीय **ज.** भारतेंदु
झ. स्वेच्छा **ञ.** वीरोचित **ट.** व्यापक **ठ.** सख्यागमन
ड. गुरूर्पण **ढ.** पित्रुपदेश **ण** चयन

अध्याय–9 समास

1. **क.** (अ) **ख.** (स) **ग.** (ब) **घ.** (अ) **ङ.** (स) **च.** (ब) **छ.** (स) **ज.** (अ) **झ.** (अ) **ञ.** (स) **ट.** (अ) **ठ.** (ब) **ड.** (स) **ढ.** (ब) **ण.** (द)
2. द्वन्द्व समास
3. अव्ययीभाव समास
4. बहुव्रीहि समास में
5. तत्पुरुष समास
6. कर्म तत्पुरुष
7. तत्पुरुष समास
8. उदाहरण-शोक-आहत। समास विग्रह—शोक से आहत
9. उदाहरण—राजपुत्र। समास विग्रह— राजा का पुत्र
10. उदाहरण—चंद्रमौलि। समास विग्रह—चंद्र है मौलि पर जिसके अर्थात् भगवान शिव
11. तत्पुरुष समास। अ + न्याय। विग्रह — न न्याय
12. **अव्ययीभाव समास**— जिस समास में पूर्व पद कोई अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे—

पूर्वपद (अव्यय)	+	**उत्तरपद**	=	**समस्तपद**	**विग्रह**
प्रति	+	एक	=	प्रत्येक	प्रति एक
आ	+	जीवन	=	आजीवन	जीवन-भर

13. **द्विगु समास**— इस समास में पूर्व पद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी उत्तरपद भी संख्यावाचक हो सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या समूह का बोध कराती है। इससे किसी समूह या समाहार का ज्ञान होता है। जैसे—

विग्रह	**समस्तपद**	**विग्रह**	**समस्तपद**
नौ ग्रहों का समूह	नवग्रह	पाँच तत्वों का समूह	पंचतत्व
चार मासों का समूह	चौमासा	सात ऋषियों का समूह	सप्तर्षि

14. **द्वंद्व समास**— इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। सामान्यतः दोनों पद एक-दूसरे का विलोम-भाव रखते हैं। इसमें और, एवं, या, व का लोप होता है। जैसे—

विग्रह	**समस्तपद**	**विग्रह**	**समस्तपद**
जल और वायु	जलवायु	गुण और दोष	गुणदोष
ठंडा और गर्म	ठंडा-गर्म	दिन और रात	दिन-रात

15. बहुव्रीहि समास— इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता अपितु अन्य कोई पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर— वाला है, जो, जिसका, वह आदि परसर्ग आते हैं। जैसे—

समस्तपद	**विग्रह**
गजानन	गज जैसा आनन है जिसका अर्थात् गणेश
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश
दशानन	दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण
नीलकंठ	नीले कंठ वाला अर्थात् शिवजी

16. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर— कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है। इसका दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है। जैसे—नील कमल में नील (उपमान) और कमल (उपमेय) है। चरणकमल में चरण उपमेय और कमल उपमान है।

बहुव्रीहि समास का समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है। जैसे—चक्रधर—चक्र धारण करता है जो अर्थात् विष्णुजी।

नीलकंठ — नीले कंठ वाला (कर्मधारय)

नीलकंठ — नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिवजी (बहुव्रीहि)

गजानन — गज जैसे आनन वाला (कर्मधारय)

गजानन — गज जैसा आनन है जिसका अर्थात् गणेशजी (बहुव्रीहि)

17. द्विगु और बहुव्रीहि समास में अंतर—द्विगु समास का पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य होता है, जबकि बहुव्रीहि समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है और अन्य कोई पद प्रधान होता है। जैसे—

चतुरानन — चार आनन का समाहार (द्विगु)   चतुरानन — चार हैं आनन जिसके अर्थात् ब्रह्माजी (बहुव्रीहि)

दशानन — दस आननों का समाहार (द्विगु)   दशानन — दस हैं आनन जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि)

18. द्विगु और कर्मधारय समास में अंतर— द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो द्वितीय पद की संख्यावाचक विशेषता बताता है जबकि कर्मधारय समास का एक पद विशेषण एवं द्वितीय पद विशेष्य होता है। इसका कोई भी पद विशेषण और विशेष्य हो सकता है किंतु संख्यावाचक कभी नहीं हो सकता। जैसे—

त्रिभुज	—	तीन (संख्यावाचक विशेषण)	भुजाओं का समाहार (द्विगु)
चतुर्भुज	—	चार (संख्यावाचक विशेषण)	भुजाओं का समाहार (द्विगु)
चंद्रबदन	—	चंद्रमा (विशेषण) के समान	बदन (विशेष्य) (कर्मधारय)
चरणकमल	—	चरण (विशेष्य) हैं जो	कमल (विशेषण) के समान (कर्मधारय)

19. (क) चार हैं आनन जिसके — चतुरानन — बहुव्रीहि समास

(ख) चन्द्र का उदय — चन्द्रोदय - तत्पुरुष समास

(ग) जन्म से अंधा - जन्मांध - अपादान तत्पुरुष

(घ) तिल से बनी पापड़ी - तिल-पापड़ी - तत्पुरुष समास

(ङ) देव और असुर - देवासुर - द्वन्द्व समास

(च) नरों में उत्तम - नरोत्तम - तत्पुरुष समास

(छ) वज्र है आयुध जिसका -वज्रायुध - बहुव्रीहि समास

(ज) राम का अयन - रामायन -तत्पुरुष समास

(झ) यथा इष्ट - यथेष्ट - अव्ययीभाव समास

(ञ) माल के लिए गोदाम - मालगोदाम - तत्पुरुष

(ट) चार पाँव वाला - चौपाया - द्विगु समास

अध्याय–10 शब्द विचार

1. **क.** (ब) **ख.** (अ) **ग.** (ब) **घ.** (द) **ङ.** (द) **च.** (अ) **छ.** (स) **ज.** (स) **झ.** (द) **ञ.** (ब)
2. **क.** अविकारी, **ख.** अरबी, **ग.** यौगिक, **घ.** फारसी, संस्कृत, **ङ.** पश्चात्ताप, **च.** देशज, **छ.** संकर, **ज.** ओष्ठ **झ.** विकारी, **ञ.** तत्सम।
3. **शब्द**—वर्णों के सार्थक सामूहिक मेल को शब्द कहते हैं। वर्णों के सार्थक मेल से शब्द का निर्माण होता है। वर्ण का स्वतंत्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता। जबकि शब्द का अर्थ होता है। शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य बनता है।
4. शब्द के निम्नलिखित आधारों पर पाँच भेद हैं—
   1. व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर (जैसे—घोड़ा, घोड़े, बाहर)। 2. प्रयोग के आधार पर (जैसे—पूजा, पहाड़ी, भौतिकी)। 3. उत्पत्ति के आधार पर (जैसे—भ्राता, भाई, खटखटाना, टिकट)। 4. रचना या बनावट के आधार पर (जैसे—कमल, पीलापन, दशानन)। 5. अर्थ के आधार पर (जैसे—सहपाठी, आचार-अचार, नेत्र-लोचन, गरीब-अमीर, हाथ-किरण-टैक्स, द्वेष-ईर्ष्या)।
5. तत्सम शब्द—दंड, ग्रंथि, कारु, तत्सम
   तद्‌भव शब्द—घर, साग, पौधा, दाँत
   देशज—खटिया, फटाफट, धड़ाम, लुटिया, खिचड़ी
   विदेशी—स्कूल, दारोगा, दफ्तर, पेंसिल, इंजन
6. यौगिक — विद्यार्थी, प्रयोगशाला, मेलजोल, नरेंद्र, दयावान
   योगरूढ़—हलधर, निशाचर, जलज, वीणावादिनी, चक्रधर, बज्रांग, एकदंत
7. 1. रेलगाड़ी— आजकल रेलगाड़ी से यात्रा करना बहुत आरामदायक है।
   2. टिकटघर— फिल्म देखने के लिए टिकटघर से टिकट खरीद लो।
   3. मोटरगाड़ी— वह मोटरगाड़ी से कार्यालय जाता है।
   4. छायादार— छायादार वृक्ष गर्मी में राहत देता है।
   5. कामधंधा— राजू अब कामधंधा करने लगा है।
8. **यौगिक शब्द**— वे शब्द जो दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के योग से बनते हैं, सार्थक शब्द कहलाते हैं। इन शब्दों का विभाजन किए जाने पर इनके खंड भी सार्थक ही रहते हैं। जैसे—
   देवालय = देव + आलय
   आगमनादि = आ + गमन + आदि
   श्रुतिसमभिन्नार्थक = श्रुति + सम + भिन्न + अर्थक
   उपर्युक्त समस्त शब्दों के □खंड करने पर प्राप्त शब्द भी सार्थक हैं, अत: ये सभी शब्द यौगिक शब्द हैं।

9.	क. छल	ख. कर्तव्य	ग. कहानी
	घ. हृदय	ङ. भाग्य	च. रस
	छ. समिति	ज. निंदा	झ. प्रतिरूप
	ञ. भूमि	ट. लिपिक	ठ. झंझावात
10.	क. अंग्रेजी	ख. फारसी	ग. पुर्तगाली
	घ. हिन्दी	ङ. फारसी	च. पुर्तगाली
	छ. जापानी	ज. चीनी	झ. रूसी
	ञ. तुर्की	ट. फारसी	ठ. अरबी
	ड. अंग्रेजी	ढ़ अरबी	ण. चीनी

11. क. मच्छर ख. मीत ग. कुआँ
घ. हाथ ङ. काँटा च. गाँव
छ. घोड़ा ज. सौ झ. खेत
ञ. ओंठ ट. बहू ठ. कंजूस

अध्याय–11 पर्यायवाची शब्द

1. **क.** (द) **ख.** (स) **ग.** (द) **घ.** (ब) **ङ.** (स) **च.** (स) **छ.** (अ) **ज.** (अ) **झ.** (द) **ञ.** (ब) **ट.** (अ) **ठ.** (अ) **ड.** (ब और स) **ढ.** (द) **ण.** (अ) **त.** (द) **थ.** (स) **द.** (द) **ध.** (ब) **न.** (अ)

2. क. सागर—समुद्र, जलधि, उदधि ख. गिरि—पहाड़, पर्वत, शैल
ग. वन—कानन, अरण्य, जंगल घ. नर—मनुष्य, मानव, आदमी

3. क. भूमि—पृथ्वी, धरा, धरती ख. नभ—आकाश, गगन, अंबर
ग. घन—मेघ, बादल, जलद घ. निशा—रजनी, यामिनी, रात्रि

4. क. तलवार—अलि, खड्ग, कृपाण ख. धरती—पृथ्वी, धरा, वसुंधरा
ग. सुमन—फूल, कुसुम, प्रसून

5. क. सोना—स्वर्ण, कंचन, हेम ख. यमुना—कालिंदी, सूर्यसुता, जमुना
ग. पाहन—पत्थर, पाषाण, उपल घ. गिरि—पहाड़, शैल, पर्वत

6. क. खग—पक्षी, विहग, नभचर ख. आँख— नेत्र, नयन, चक्षु
ग. प्रसून—फूल, पुष्प, सुमन घ. कूल—किनारा, तट, तीर

7. क. मोर—मयूर, नीलकंठ, केरी ख. हंस—मराल, कलहंस, कारंडव
ग. आँख—नेत्र, नयन, चक्षु घ. माँ—माता, जननी, मैया
ङ. पत्नी—भार्या, वामांगी, वनिता च. गंगा—भागीरथी, देवनदी, मंदाकिनी
छ. हिमालय—नगपति, नगेश, गिरिराज ज. कामदेव—मनोज, मन्मथ, मदन

8. क. रात्रि—निशा, रजनी, विभावरी, शर्वरी ख. दिन—दिवस, वार, वासर, अह्न
ग. देवता—देव, अमर, सुर, आदित्य घ. पवन—वायु, समीर, हवा, अनिल
ङ. बिजली—विद्युत, चंचला, दामिनी, तड़ित च. भौंरा—भ्रमर, मधुकर, मधुप, अलि
छ. अमृत—सुधा, पीयूष, सोम, अमिय ज. सोना—स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम
झ. राजा—नरेश, भूप, नृप, महिपाल ञ. पार्वती—उमा, गौरी, गिरिजा, भवानी

9. क. विष—जहर, गरल, हलाहल, माहुर ख .सोना—स्वर्ण, कंचन, कनक, हेम
ग. सिंह—शेर, वनराज, शार्दूल, मृगराज घ. सुंदर—सुशील, मनोहर, रमणीक, आकर्षक

10. क. धनुष—कमान, चाप ख. पत्थर—पाषाण, शिला
ग. स्वर्ग—देवलोक, सुरलोक

11. वीर—शूर, योद्धा, बहादुर
जगत्—संसार, विश्व, लोक

अध्याय–12 विलोम शब्द

1. **क.** (अ) **ख.** (द) **ग.** (स) **घ.** (अ) **ङ.** (ब) **च.** (ब) **छ.** (द) **ज.** (द) **झ.** (अ) **ञ.** (ब)
2. **विपरीतार्थक**–शब्दों के अपने निश्चित अर्थ होते हैं। उन अर्थों के विपरीत अर्थ देने वाले शब्दों को विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे मोटा–पतला, बालक–वृद्ध
3. क. न्यूनतम–अधिकतम ख. आरोही–अवरोही ग. सुगम–दुर्गम
   घ. सभ्य–असभ्य ङ. आकर्षण–अनाकर्षण च. सक्रिय–निष्क्रिय
   छ. मृदुभाषी–कटुभाषी ज. विलोम–समान/पर्याय झ. संघर्ष–समझौता
   ञ. साध्य–असाध्य ट. वास्तविक–काल्पनिक ठ. आयात–निर्यात
   ड. अंतर्विभाजन–संगठन ढ. मादा–नर ण. संयोग–वियोग
   त. ह्रस्व–दीर्घ थ. भीरु–निर्भीक द. मंद–तीव्र
   ध. लौकिक–अलौकिक न. पक्षपाती–निष्पक्ष
4. (क) 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ लेकिन अभी भी आर्थिक रूप से परतंत्र है।
   (ख) ईमानदार व्यक्ति का सदैव पक्ष लेना चाहिए बुराई के विपक्ष में रहना चाहिए।
   (ग) आज के समय में रक्षक ही भक्षक बन गए हैं।
   (घ) कठिन परिश्रम करके वह विपन्न से संपन्न बन गया।
   (ङ) सज्जन की संगति करनी चाहिए, दुर्जन का साथ छोड़ देना चाहिए।
   (च) विद्या धन वितरण करने से बढ़ता है, जबकि संग्रह से घटता है।
   (छ) कई दिन निराहार रहकर उसे आज आहार मिला।
   (ज) सज्जनों का अनुकरण तथा दुर्जनों की उपेक्षा करनी चाहिए।

अध्याय–13 अनेकार्थी शब्द

1. **क.** (अ) **ख.** (स) **ग.** (द) **घ.** (अ) **ङ.** (द) **च.** (स) **छ.** (स) **ज.** (स) **झ.** (स) **ञ.** (स) **ट.** (अ) **ठ.** (स) **ड.** (अ) **ढ.** (ब) **ण.** (द)
2. क. पतंगों (कीड़े)
   ख. आम, आम (आम फल का नाम, जन साधारण)
   ग. घोड़ा, घोड़ा (बंदूक का भाग, पशु का नाम)
   घ. सारंग, सारंग (मोर, सर्प)
   ङ. हल, हल (खेत जोतने का यंत्र, समाधान)
   च. भाग, भाग (गणित की क्रिया, हिस्सा)
   छ. लहर, लहर (जल की तरंग, मन की उमंग)
   ज. जवान, जवान (युवा, सैनिक)
   झ. अंबर, अंबर (आकाश)
   ञ. जीवन, जीवन (जिंदगी, जीवन-साथी)
   ट. द्विज, द्विज (वैश्य, ब्राह्मण)
   ठ. बलि, बलि (एक राजा का नाम, बलिदान)
   ड. कुल, कुल (वंश, संपूर्ण)

ढ. खर, खर (मोटा, गधा)
ण. चाल, चाल (स्थिति, परिणाम)

अध्याय–14 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

1. **क.** (द) **ख.** (अ) **ग.** (स) **घ.** (ब) **ङ.** (द) **च.** (स) **छ.** (अ) **ज.** (ब) **झ.** (स) **ञ.** (ब)
2. क. मात्र
   ख. मूल
   ग. परिणाम
   घ. दीन
   ङ. अन्न
   च. नीड़
   छ. चिर
   ज. उपेक्षा
   झ. निशान
   ञ. पाश
3. (क) ओर – (दिशा) - रामू को उस ओर जाना चाहिए।
   और – कुछ अधिक – कविता को और खाना चाहिए।
   (ख) ग्रह (नक्षत्र) – हमारे सौरमंडल में नौ ग्रह हैं।
   गृह (घर) – गृहिणी से गृह व्यवस्थित होता है।
   (ग) अपेक्षा (उम्मीद) – मुझे श्यामू से यह अपेक्षा नहीं थी।
   उपेक्षा (ध्यान न देना) – व्यक्ति को अपने कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।
   (घ) चिर (प्रारंभ) – मानव का चिरकाल से ही प्रकृति से नाता रहा है।
   चीर (कपड़े का टुकड़ा)– उँगली में चोट लग गई है, चीर बाँध दो।
   (ङ) वदन (मुँह) – क्रोध से जय का वदन लाल हो गया।
   बदन (शरीर) – पहलवान का बदन गठीला है।
   (च) सुत (पुत्र) – राजा दशरथ के चार सुत थे।
   सूत (धागा)– कपास के सूत से बड़ी-बड़ी रस्सियाँ बनाई जाती हैं।
   (छ) प्रकार (किस्म)– संज्ञा प्रमुखत: तीन प्रकार की होती हैं।
   प्राकार (परकोटा)–चित्तौड़गढ़ के किले का प्राकार अति विशाल व ऊँचा है।

अध्याय–15 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

1. **क.** (स) **ख.** (स) **ग.** (द) **घ.** (अ) **ङ.** (ब) **च.** (स) **छ.** (ब) **ज.** (अ) **झ.** (द) **ञ.** (द) **ट.** (अ) **ठ.** (ब) **ड.** (स) **ढ.** (ब) **ण.** (ब)
2. **क.** जहाँ रोगी का इलाज होता हो– अस्पताल
   ख. जो फल बेचता हो– फल विक्रेता
   ग. जो खेती करता हो– किसान
   घ. जो कपड़े सिलता हो– दर्जी

3. क. साथ में पढ़ने वाला—सहपाठी
ख. जिसका कोई शत्रु न हो—अजातशत्रु
ग. आलोचना करने वाला—आलोचक
घ जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो—जितेन्द्रिय
ङ. आकाश को चूमने वाला—गगनचुंबी
च. दूसरों का भला करने वाला—परोपकारी
छ. सोच-समझ कर खर्च करने वाला—मितव्ययी
ज. जिसका स्वभाव झगड़ा करने का हो—झगड़ालू
झ. किसी के उपकार को न मानने वाला—कृतघ्न
ञ. किसी के उपकार को मानने वाला—कृतज्ञ
ट. जिसके आर-पार दिखाई दे—पारदर्शी
ठ. 15 दिन में छपने वाला—पाक्षिक
ड. जो एक ही उदर से जन्मा हो—सहोदर
ढ. विदेश से मँगाया जाने वाला सामान—आयातित
ण. अंडे से जन्म लेने वाला—अंडज
त. ऊँचे कुल में जन्म लेने वाला—कुलीन
थ. कहानी लिखने वाला—कहानीकार
द. सुंदर आँखों वाली स्त्री—सुलोचना
ध. वेतन पाने वाला व्यक्ति—वेतनभोगी
न. तेज हवाओं के साथ होने वाली वर्षा—झंझावात
प. बच्चे को प्रथम बार अन्न खिलाना—अन्नप्राशन

अध्याय–16 मुहावरे

1. **क.** (स) **ख.** (ब) **ग.** (स) **घ.** (स) **ङ.** (अ) **च.** (स) **छ.** (स) **ज.** (अ) **झ.** (स) **ञ.** (अ)
2. क. यह नेता जो भी करें कम है। सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं।
ख. गरीब भ्रम न पालें, अमीर सदा उन्हें उँगली पर नचाते हैं।
ग. मजदूरों की दिहाड़ी काटकर मिल-मालिक उनका गला काटते हैं।
घ. उधार माँगने पर बड़े भाई ने हरी को टका-सा जवाब दे दिया।
ङ. जन्मदिन का बड़ा-सा केक देखते ही सभी बच्चों के मुँह में पानी आ गया ।
च. मयंक से कोई भी काम करवाना टेढ़ी खीर है।
छ. मेरी और लखन की दोस्ती दाँत काटी रोटी जैसी है।
ज. रानी घर से भागकर सभी की आँखों से गिर गई।
झ. गीता फोगाट ने अपने प्रतिद्वंद्वी को पल भर में धूल चटा दी।
ञ आपकी तारीफ करना तो सूरज को दिया दिखाने जैसा है।
3. क. गिरना
ख. किले
ग. अलग
घ. बल
ङ. लाठी
च. सिक्का
छ. आम
ज. फूल
4. क. पौ बारह होना— सब तरफ से लाभ ही लाभ होना।
वाक्य प्रयोग— जब से उसने व्यापार में कदम रखा, उसके तो पौ बारह हो गए।
ख. फूला न समाना— अत्यधिक प्रसन्न होना।
वाक्य प्रयोग— परीक्षा में अच्छे अंक आने पर नितेश फूला न समाया।
ग. शूल उठना— मन में बेचैनी होना।
वाक्य प्रयोग— परीक्षा में कम अंक आने पर उसके मन में शूल उठने लगे।
घ. मीठी नींद सोना— निश्चिंत होकर सोना।
वाक्य प्रयोग— माँ की गोद में बच्चा मीठी नींद सो रहा है।
ङ. बैर मोल लेना— जान-बूझकर मुसीबत खड़ी करना।
वाक्य प्रयोग— कंपनी के नियमों का उल्लंघन करके रोहित ने प्रबंधक से बैर मोल ले लिया।

च. मुँह छिपाना— शर्मिंदा होना।
वाक्य प्रयोग— अपनी गलती स्वीकार न करने पर वह मुँह छिपाता फिर रहा था।
छ. मुँह पर कालिख लगना— बदनामी होना या कलंकित होना।
वाक्य प्रयोग— शिवाय ने चोरी करके अपने परिवार के मुँह पर कालिख पोत दी।

5. क. आग बबूला होना— अत्यधिक क्रोधित होना।
वाक्य प्रयोग— बच्चों द्वारा खिड़की का काँच तोड़ने पर पड़ोसी आग बबूला हो गया।
ख. टीका-टिप्पणी करना— आलोचनात्मक विचार व्यक्त करना।
वाक्य प्रयोग— टीका-टिप्पणी करने से पहले हमें तथ्यों की जाँच कर लेनी चाहिए।
ग. नुक्ताचीनी करना— दोष निकालना।
वाक्य प्रयोग— बच्चों की गलतियों पर नुक्ताचीनी करने के बजाय प्यार से समझाना चाहिए।

6. क. जान की बाजी लगाना— अपनी जान को खतरे में डालना।
वाक्य प्रयोग— सैनिक अपने देश की रक्षा में जान की बाजी लगा देते हैं।
ख. आँखों में आँसू भर आना— दुखी होना।
वाक्य प्रयोग— गरीब बच्चे की हालत देखकर मेरी आँखें भर आईं।
ग. होंठ फड़कना— क्रोधित होना।
वाक्य प्रयोग— परशुराम के कटु वचन सुनकर लक्ष्मण के होंठ फड़कने लगे।
घ. कलेजा मुँह को आना— बहुत घबराहट या डर महसूस होना।
वाक्य प्रयोग— अचानक सामने शेर को देखकर उसका कलेजा मुँह को आ गया।

7. क. साँचे में ढला होना— एक ही रूप-रंग का होना।
वाक्य प्रयोग— दोनों भाई देखने में बिलकुल एक जैसे हैं मानो एक ही साँचे में ढले हों।
ख. ज्वार-सा उमड़ आना— भावनाओं का तीव्रगति से उमड़ना।
वाक्य प्रयोग— मैच जीतने की खुशी में दर्शकों के बीच ज्वार-सा उमड़ आया।
ग. चकाचौंध उत्पन्न करना— किसी को चकित या स्तब्ध कर देना।
वाक्य प्रयोग— मेले में इतनी सारी दुकानें और रोशनी देखकर बच्चे चकाचौंध हो गए।

8. क. आँखों से ओझल होना— विहान इतनी तेज दौड़ा कि देखते-देखते ही आँखों से ओझल हो गया।
ख. मन मसोसकर रह जाना— जब उमेश को पता चला कि उसका दोस्त परीक्षा में नकल करके पास हुआ है तो वह मन मसोसकर रह गया।
ग. हृदय भर आना— बेटी की विदाई के समय माँ का हृदय भर आया।

9. मन को मोहित करना— किसी को अपनी ओर आकर्षित करना।
वाक्य प्रयोग— प्रदर्शनी में हस्तशिल्प की वस्तुओं ने दर्शकों का मन मोह लिया।

10. बाँछें खिलना—अत्यधिक प्रसन्न होना।
वाक्य प्रयोग— परीक्षा में प्रथम आने पर नवीन की तो बाँछें खिल गईं।

11. क. पाँव-तले जमीन खिसकना— जब विकास ने सुना कि उसकी नौकरी चली गई है तो उसके पाँवों तले जमीन खिसक गई।
ख. सन्नाटा छाना— एक्सीडेंट की खबर सुनकर परिवार में सन्नाटा छा गया।
ग. फूला न समाना— बेटे की सरकारी नौकरी लगने पर गुप्ताजी फूले नहीं समा रहे थे।
घ. घड़ों पानी पड़ना— परीक्षा में नकल करते हुए पकड़े जाने पर छात्र पर घड़ों पानी पड़ गया।

अध्याय–17 लोकोक्तियाँ

1. **क.** (द) **ख.** (स) **ग.** (अ) **घ.** (अ) **ङ.** (द) **च.** (अ) **छ.** (स) **ज.** (स) **झ.** (ब)
2. **लोकोक्तियाँ**– आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गयी उक्तियाँ, लोकोक्तियाँ कहलाती हैं। जैसे– अंधों में काना राजा।
3. **अंतर**–विशिष्ट अर्थ देने वाले वाक्यांशों को मुहावरा कहते हैं। ये वाक्य में आकर उनका अर्थ बदल देते हैं, जबकि लोकोक्ति का अर्थ है– आम जनता के बीच प्रचलित या उनके द्वारा कही गई। लोकोक्ति अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। इसका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र रूप से होता है।
4. (क) अंत भला तो सब भला– यदि किसी काम का परिणाम अच्छा हो तो शुरुआत की कठिनाई मायने नहीं रखती। परीक्षा में पहले अच्छी तैयारी नहीं हो सकी, लेकिन अंत में अच्छे नंबर आए। सही है– अंत भला तो सब भला।
   (ख) अरहर की टटिया गुजराती ताला– कम मूल्यवान वस्तु पर बहुत अधिक सुरक्षा–रामू ने अपनी पुरानी साइकिल में एक हजार रुपए का ताला लगवाया। इसे कहते हैं– अरहर की टटिया गुजराती ताला।
   (ग) आधा तीतर आधा बटेर– बेमेल होना– लक्ष्मण सिंह ने अपनी शादी में आधे पंजाबी और आधे बंगाली रीति-रिवाजों का पालन किया। यह तो वही हुआ– आधा तीतर आधा बटेर।
   (घ) उधार दो, दुश्मन बनाओ– जान-बूझकर परेशानी मोल लेना। मैंने अपने दोस्त को कुछ पैसे उधार दिए थे, अब वह मुझसे बात भी नहीं करता। सच ही है, उधार दो, दुश्मन बनाओ।
   (ङ) ऊँचा तिलक माधुरी बानी, दगाबाज की यह निशानी– कुटिल व्यक्ति ही आडम्बर अधिक करते हैं। हम उसके भव्य स्वरूप को देखकर धोखा खा गए। ठीक ही कहा है – ऊँचा तिलक माधुरी बानी, दगाबाज की यही निशानी।
5. (क) एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है– मोहन की बुरी संगत ने पूरे परिवार का नाम खराब कर दिया । सच है एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।
   (ख) कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा– बाबूलाल ने इधर-उधर से सामान इकट्ठा करके एक बेढंगा घर बना लिया। यह तो वही हुआ– कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।
   (ग) कानी के ब्याह में सौ जोखिम– आज सरकारी नौकरी पाने में बहुत अड़चनें आती हैं। सच ही है– कानी के ब्याह में सौ जोखिम।
   (घ) खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे– जब वह अपनी गलती नहीं मान पाया, तो बेवजह दूसरों पर गलती थोपकर गुस्सा करने लगा। सच है– खिसियानी बिल्ली खंभा नोंचे।
   (ङ) घर का भेदी लंका ढाए– दुश्मन को हमारे गुप्त भेद बताकर उसने यही कहावत सच कर दी– घर का भेदी लंका ढाए।
6. (क) लातों के भूत बातों से नहीं मानते– दुष्ट व्यक्ति केवल कठोरता से ही सुधरते हैं, समझाने से नहीं।
   (ख) पाँचों उँगलियाँ घी में– हर तरफ से लाभ ही लाभ होना या अत्यधिक मौज-मस्ती करना।
   (ग) दूर के ढोल सुहावने– दूर की चीजें या बातें अच्छी लगती है, लेकिन पास आने पर उसकी सच्चाई का पता चलता है।
   (घ) तीन लोक से मथुरा न्यारी– सबसे अलग या निराला होना।
   (ङ) यथा राजा तथा प्रजा– जैसा मालिक होता है, वैसे ही उसके कर्मचारी होते हैं।
   (च) गोद में छोरा नगर में ढिंढोरा– पास रखी वस्तु को दूर-दूर तक ढूँढ़ना।
   (छ) कहने से कुम्हार गधे पर नहीं चढ़ता– कोई व्यक्ति किसी के कहने से अपना काम नहीं करता, बल्कि अपनी मर्जी से करता है।

(ज) छठी का दूध याद दिलाना— बहुत अधिक कष्ट या परेशानी में डालना।
(झ) घर की मुर्गी दाल बराबर— अपनी वस्तु या व्यक्ति का महत्व न समझना।
(ञ) घाट-घाट का पानी पीना— बहुत अनुभवी होना।

7. (क) अकल बड़ी या भैंस
(ख) खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे
(ग) उल्टी गंगा बहाना
(घ) वाणी चाँदी मौन सोना
(ङ) खुली छूट मिलना
(च) आगे कुआँ पीछे खाई
(छ) एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकतीं
(ज) आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास
(झ) ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया
(ञ) अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग

8.
- छोटा मुँह बड़ी बात— योग्यता से अधिक बोलना— रिया अपनी माँ से कहने लगी— मैं आपको इडली-साँभर बनाना सिखाऊँगी। माँ ने कहा— सही है— छोटा मुँह बड़ी बात।
- अंधे की लकड़ी होना— श्रवण कुमार अपने अंधे माता-पिता के एकमात्र पुत्र थे, सच में वह अंधे की लकड़ी थे।
- आग-बबूल होनाा—क्रोधित होना— पुत्र की उद्दंडता देखकर पिताजी आग-बबूला हो गए।

अध्याय–18 वाक्य विचार

1. **क.** (अ) **ख.** (स) **ग.** (अ) **घ.** (स) **ङ.** (ब) **च.** (द) **छ.** (अ) **ज.** (ब) **झ.** (ब) **ञ.** (द) **ट.** (अ) **ठ.** (स) **ड.** (स) **ण.** (ब) **त.** (अ)

2.

	उद्देश्य	विधेय
क.	आप	यहाँ आकर वार्ता कीजिए।
ख.	चंद्रशेखर आजाद	स्वतंत्रता के लिए जिए और मरे।
ग.	स्मृति का भाई अल्पेश	मेरा सहपाठी है।
घ.	भृगु की बहन दुर्गेश	सुंदर-सुंदर चित्र बनाती है।
ङ.	आप	स्नान करके भोजन कर लीजिए।
च.	मेरे पक्के मित्र देवेश ने	कल मेरी मदद की।
छ.	मैंने	सड़क पर कुचला हुआ साँप देखा।
ज.	भूख से तड़पते बालक ने	अपना भोजन दान कर दिया।
झ.	सभी चोर	पुलिस को देखकर भाग गए।
ञ.	युवराज ने	एक ओवर में छह छक्के लगाए।

3. क. मनु ननिहाल में बीमार हो गया।
ख. वह स्कूल से घर आकर खेलने लगा।
ग. गाँव में सूखा पड़ने से ग्रामीण जीवन बिलबिला उठा।
घ. सूरज निकलने पर आकाश में लालिमा छा गई।

ङ. मेरा नेपाली मित्र कल कुएँ में गिर गया।

च. कल आँधी आने से अनेक वृक्ष गिर गए।

छ. मैंने उसे मुस्कुराते हुए देखा।

ज. वह हमेशा कर्ज लेकर लौटाता नहीं है।

झ. एक सुंदर लड़का कल तुम्हें पूछ रहा था।

ञ. यह मेरी किताब मुझे मेरी दादी जी ने दी थी।

4. क. आश्रित उपवाक्य—कि वह आगे बढ़े। प्रकार—संज्ञा उपवाक्य

ख. आश्रित उपवाक्य—जहाँ भी गया। प्रकार—क्रिया विशेषण उपवाक्य

ग. आश्रित उपवाक्य—जब भी वह मेरे घर आया। प्रकार—विशेषण उपवाक्य

घ. आश्रित उपवाक्य—जो परिश्रम करते हैं। प्रकार—विशेषण उपवाक्य

ङ. आश्रित उपवाक्य—अब मैं तुम्हारे घर नहीं आऊँगा। प्रकार—संज्ञा उपवाक्य

च. आश्रित उपवाक्य—कि यह जगत मिथ्या है। प्रकार—संज्ञा उपवाक्य

छ. आश्रित उपवाक्य—यदि तुम मेरे पास आते। प्रकार—क्रिया विशेषण उपवाक्य

ज. आश्रित उपवाक्य—जो भीख माँग रहा था। प्रकार—विशेषण उपवाक्य

5. क. उपवाक्य का नाम—संज्ञा उपवाक्य

ख. उपवाक्य का नाम—विशेषण उपवाक्य

ग. उपवाक्य का नाम—क्रिया विशेषण उपवाक्य

घ. उपवाक्य का नाम—विशेषण उपवाक्य

ङ. उपवाक्य का नाम—संज्ञा उपवाक्य

च. उपवाक्य का नाम—विशेषण उपवाक्य

छ. उपवाक्य का नाम—क्रिया विशेषण उपवाक्य

ज. उपवाक्य का नाम—संज्ञा उपवाक्य

झ. उपवाक्य का नाम—संज्ञा उपवाक्य

ञ. उपवाक्य का नाम—विशेषण उपवाक्य

6. क. जो सच बोलता है, उसे कोई डर नहीं होता।

ख. थोड़ा विश्राम कीजिए, फिर आगे जाइए।

ग. मूर्ति खंडित करने वालों लोगों को पुलिस ढूँढ़ रही है।

घ. सत्य बोलने वालों का ईश्वर साथ देता है।

ङ. जो गुणवान होता है, वह हर स्थान पर आदर पाता है।

च. बैठिए और बातें कीजिए।

छ. उसने परिश्रम किया, फिर भी वह गरीब है।

ज. कुछ छात्र पीछे बैठकर शरारत कर रहे हैं।

झ. पिताजी घर आ गए और तब हम लोगों ने भोजन किया।

ञ. आपके कहने पर सब मान गए।

7. (क) सरल वाक्य— भुवनेश्वर की पहली गेंद पर वार्नर आउट हो गया।

मिश्र वाक्य— जैसे ही भुवनेश्वर ने पहली गेंद फेंकी, वार्नर आउट हो गया।

संयुक्त वाक्य— भुवनेश्वर ने पहली गेंद फेंकी और वार्नर आउट हो गया।

(ख) सरल वाक्य— उसके बुलाने पर मैं तुरंत आ गया।

मिश्र वाक्य– जैसे ही उसने मुझे बुलाया, मैं तुरंत आ गया।
संयुक्त वाक्य– उसने मुझे बुलाया, मैं तुरंत आ गया।

(ग) सरल वाक्य– साधु द्वारा गाय काढ़ते ही सारा दूध फैल गया।
मिश्र वाक्य– जब साधु ने अपनी गाय काढ़ी, तब सारा दूध फैल गया।
संयुक्त वाक्य– साधु ने अपनी गाय काढ़ी और सारा दूध फैल गया।

(घ) सरल वाक्य– गरजते हुए बादल में बिजली चमक रही थी।
मिश्र वाक्य– जब बादल गरज रहे थे, तब बिजली चमक रही थी।
संयुक्त वाक्य– बादल गरज रहे थे और बिजली चमक रही थी।

(ङ) सरल वाक्य– रात को एक शोर सुनकर मैं जाग गया।
मिश्र वाक्य– जैसे ही मैंने रात को एक शोर सुना, मैं जाग गया।
संयुक्त वाक्य– मैंने रात को एक शोर सुना और मैं जाग गया।

(च) सरल वाक्य– उसके घर आने पर सबने उसका सत्कार किया।
मिश्र वाक्य– जब वह मेरे घर आई, तब सबने उसका सत्कार किया।
संयुक्त वाक्य– वह मेरे घर आई और सबने उसका सत्कार किया।

(छ) सरल वाक्य– 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री ने सुंदर भाषण दिया।
मिश्र वाक्य– जब प्रधानमंत्री 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर पर गए, तब उन्होंने सुंदर भाषण दिया।
संयुक्त वाक्य– प्रधानमंत्री 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर पर गए और उन्होंने सुंदर भाषण दिया।

(ज) सरल वाक्य– मेरे घर के सामने बगीचे में बच्चे खेल रहे हैं।
मिश्र वाक्य– मेरे घर के सामने एक बगीचा है, जिसमें बच्चे खेल रहे हैं।
संयुक्त वाक्य– मेरे घर के सामने एक बगीचा है और उसमें बच्चे खेल रहे हैं।

(झ) सरल वाक्य– तमाशा खत्म होने पर सभी अपने घर चले गए।
मिश्र वाक्य– जैसे ही तमाशा खत्म हुआ, सभी अपने घर चले गए।
संयुक्त वाक्य– तमाशा खत्म हो गया और सभी अपने घर चले गए।

(ञ) सरल वाक्य– तुम्हारा कहा हुआ मैं भूल गया।
मिश्र वाक्य– जो तुमने कहा था, मैं उसे भूल गया।
संयुक्त वाक्य– तुमने कुछ कहा था, परंतु मैं उसे भूल गया।

अध्याय–19 विराम–चिह्न

1. **क.** (द) **ख.** (अ) **ग.** (स) **घ.** (द)

2. **क.** (द) **ख.** (स) **ग.** (अ) **घ.** (स) **ङ.** (अ)

3. क. रामकुमार, मोहन और सोहन जा रहे थे
ख. उनके भाई ने कहा, "तुम्हें मेरी इच्छा का पता कैसे होगा"?
ग. अरे! तुम तो भूल ही गए, आज मेरा जन्मदिन है।
घ. मोहन स्वरूप बोला– "अब मैं घर लौट रहा हूँ।"

4. क. रमेश! रास्ते में रुक कर देखो, वहाँ कौन है?
ख. वाह! तुमने तो कमाल ही कर दिया।
ग. साकेत एक महाकाव्य है, जिसे मैथिलीशरण 'गुप्त' ने लिखा है।

घ. रमेश ने कहा– ["मुझे बहुत समय हो गया।"

ङ. मित्रो! यहाँ आओ, बैठो।

5. गाइड के निर्देश पर हमारी गाड़ी आगे बढ़ी। थोड़ा आगे चलकर हमारी गाड़ी अचानक रुक गई। गाड़ी के बिल्कुल सामने झरने के किनारे बाघ-बाघिन धूप सेकते दिखाई दिए।

6. क. मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा– मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से ठीक हूँ, इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद नहीं करनी चाहिए क्या? मैंने पेय पदार्थ देकर हंसा, कृति और यामिनी की प्यास नहीं बुझाई, लेकिन उसने मुझे अपना किट नहीं ले जाने दिया, क्योंकि वह बी. ए. में पढ़ती है, मेरी जूनियर है।

ख. दूसरे साहब अपनी दाढ़ी को खुजाते हुए कह रहे थे– "अरे जैसी नीयत होती है, अल्लाह भी वैसी बरकत देता है। इन लोगों का क्या है, यह लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।"

ग. वह इतना रईस, सभ्य और सलीकेदार हो गया है कि उसको अखाड़े की मिट्टी से सनी हुई देह से उबकाई आने लगी है। जो बचपन में धूल से खेला है, अखाड़े की मिट्टी से कैसे वंचित रह सकता है, रहता है तो उसका दुर्भाग्य है। अरे! यह साधारण धूल नहीं है, यह वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है।

अध्याय–20 पत्र लेखन

1. अपने जन्मदिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद पत्र

मातृ छाया
चौड़ा रास्ता, जयपुर
दिनांक 4 फरवरी 20_ _

प्रिय मित्र

नमस्कार

मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मैंने अपना जन्मदिन आप जैसे मित्रों के साथ मनाया। आपने मुझे जन्मदिन पर जो खास उपहार दिया है, मैं इसके लिए दिल से धन्यवाद देता हूँ।

उपहार देखकर मुझे बहुत खुशी हुई और मैं इसे अपने दैनिक जीवन में उपयोग करूँगा। इस उपहार ने मेरे जन्मदिन को और खास बना दिया। आपकी मित्रता मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है और मैं हमेशा इसे बनाये रखना चाहता हूँ।

एक बार फिर से धन्यवाद और बहुत सारा प्यार

आपका अभिन्न दोस्त

विभव मीणा

2. मित्र को अपने साथ कुछ वक्त बिताने का निमंत्रण देते हुए पत्र

1-डी, गोविंदपुरी

अजमेर।

दिनांक 04-05-20_ _

प्रिय सहेली लिपिका

सप्रेम नमस्ते,

तुम्हारा पत्र मिला था, लेकिन परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण मैं उत्तर न दे पाई। सोचा था कि परीक्षाओं के बाद पत्र लिखूँगी। तुम्हारी वार्षिक परीक्षाएँ भी समाप्त हो चुकी होंगी और परीक्षा फल भी मिल गया होगा। तुमने लिखा था कि तुम्हारी अजमेर की विश्व प्रसिद्ध दरगाह के दर्शन की बड़ी इच्छा है। मैं चाहती हूँ कि यह ग्रीष्मावकाश तुम हमारे साथ बिताओ। तुमसे मिले हुए भी बहुत समय हो गया है। इस बहाने हमें कुछ दिन एक साथ रहने का मौका भी मिल जाएगा।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरा अनुरोध स्वीकार करते हुए पत्रोत्तर शीघ्र दोगी।

तुम्हारी प्रिय सखी

कृतिका

3. नगर निगम अधिकारी को नगर में डेंगू, चिकनगुनिया फैलने के कारण एवं उससे निपटने की तैयारियों के संबंध में पत्र

संचित गुलाटी

9 ए, मधुपुरी, लुधियाना

दिनांक: 12 अगस्त 20_ _

सेवा में

श्रीमान अध्यक्ष महोदय,

नगर निगम, लुधियाना।

महोदय,

निवेदन है कि इस समय पूरे शहर में डेंगू और चिकनगुनिया एक महामारी का रूप ले चुके हैं, रोगियों से अस्पताल भरे पड़े हैं। इसका मुख्य कारण सफाई की उचित व्यवस्था न होना है। सफाई कर्मचारियों की लापरवाही तथा अकर्मण्यता के कारण गंदगी का प्रकोप दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। ओपन उफनते सीवर, ओवरफ्लो नालियों का सड़कों पर बहता गंदा पानी और स्थान–स्थान पर लगे कूड़े की ढेरियाँ साक्षात् नारकीय दृश्य उपस्थित कर रही हैं। बीमारी और गंदगी के कारण स्थानीय वासियों का जीवन नर्क बनकर रह गया है। गंदगी के कारण दिन में मक्खियों और रात को मच्छरों का प्रकोप इतना बढ़ गया है कि हमारी नींद और चैन दोनों ही खराब हो गए हैं।

अत: आपसे निवेदन है कि स्थिति की गंभीरता को देखते हुए तुरंत ही इस दिशा में समुचित कदम उठाएँ और नगर की सफाई व्यवस्था सुचारु करें, ताकि हमें इस गंदगी और महामारी की नारकीय यंत्रणा से मुक्ति मिल सके।

विश्वास के साथ,

भवदीय

संचित गुलाटी

4. अपनी सखी को वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बधाई पत्र

676, आदर्श नगर,नागपुर

दिनांक : 20 अक्टूबर 20_ _

प्रिय मित्र गरिमा,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हारा कुशल-पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुमने जिलास्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इस सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। मेरा विचार है कि विद्यालयों में इस प्रकार के क्रियाकलाप बड़े उपयोगी हैं। प्रजातंत्र व्यवस्था में इस प्रकार का प्रारंभिक प्रशिक्षण प्राप्त होना परम आवश्यक है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम अपनी सफलता को इसी प्रकार आगे भी बनाए रखोगी। पुन: एक बार हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारी अभिन्न सहेली

मुस्कान भार्गव

5. विद्यालय में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम का विवरण देते हुए नानाजी को पत्र

राम बाग

नई दिल्ली

दिनांक 26 जुलाई 20_ _

श्रद्धेय नाना जी

सादर चरण स्पर्श।

आशा है, आप सब सकुशल होंगे। आज हमारे विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी पधारे थे। उन्होंने वृक्षों के महत्व के बारे में तथा पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में अनेक बातें बताईं। उनके साथ अन्य कई अधिकारी भी आए थे।

जिलाधिकारी महोदय, अधिकारी, प्रधानाचार्य, शिक्षकगण तथा स्कूल के कुछ छात्रों ने मिल-जुलकर कई पौधे लगाए। मुझे भी इस आयोजन में पौधा लगाने के लिए अवसर प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर नृत्य-नाटक जैसे अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया गया। यह आयोजन सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण बन गया।

नानीजी को चरण स्पर्श।

आपका प्रिय

अंबुज शर्मा

6. पासबुक खो जाने की सूचना देते हुए नई पासबुक जारी करने हेतु बैंक अधिकारी को पत्र

सेवा में,

श्रीमान शाखा प्रबंधक महोदय

बैंक ऑफ बड़ौदा

गणपति प्लाजा, इंदौर

विषय—नई बैंक पासबुक जारी करने के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं राजेश कुमार आपकी बैंक में खाताधारक हूँ। आपकी गणपति प्लाजा बैंक शाखा में मेरा बचत खाता है, जिसका खाता संख्या 3278XXXX है। मैं अपने काम से बाहर गया था, उस समय मेरा बैग चोरी हो गया। जिसमें मेरे अन्य जरूरी कागजात के साथ पासबुक भी चोरी हो गई, जिसके कारण मैं अपने खाते की जानकारी तथा लेन-देन करने में असमर्थ हूँ।

अत: आपसे नम्र निवेदन है कि मेरी नई पासबुक जारी करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

भवदीय

नाम : दानेश कुमार

खाता संख्या : 3278XXXX

मोबाइल नंबर : 8100XXXXX

हस्ताक्षर : ....

7. प्रधानाध्यापक को कक्षा-वर्ग बदलवाने के लिए प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

प्रधानाध्यापक महोदय

राजकीय उच्च माध्यकि विद्यालय

भोपाल (म.प्र.)

विषय— कक्षा-वर्ग बदलवाने के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं अभय भारद्वाज कक्षा 8 (ब) का छात्र हूँ। मैं आपसे 8 (ब) से 8 (अ) में कक्षा बदलवाने का अनुरोध कर रहा हूँ। वर्तमान कक्षा में कुछ उद्दंड छात्रों की वजह से शोर-शराबा अधिक रहता है। शिक्षक महोदय की पढ़ाई की शैली मेरे अनुकूल नहीं है, जिसके कारण मुझे पढ़ाई में कठिनाई हो रही है। कक्षा 8 (अ) में बेहतर शिक्षण वातावरण है। मेरे कुछ मेधावी साथी भी इस कक्षा में पढ़ते हैं। शिक्षक महोदय की पढ़ाने की शैली भी मेरे अनुकूल है। कक्षा 8 (अ) में जाने से मेरी पढ़ाई में सुधार होगा और मैं बेहतर प्रदर्शन कर सकूँगा।

आपसे विनम्र निवेदन है कि मेरी इस प्रार्थना पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करके कक्षा-कक्ष को बदलने की कृपा करें। आपकी इस कृपा के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी शिष्य

दीपक राजपूत

कक्षा-8 (ब)

अनुक्रमांक - 13

दिनांक 17-7-20_ _

8. सेवा में

श्रीमान प्रधानाध्यापक,

आदर्श विद्या मंदिर, चिड़ावा।

विषय— अस्वस्थता के कारण प्रधानाचार्य को पाँच दिन के अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं कल रात से अस्वस्थ हूँ। डॉक्टर ने मुझे पूर्ण आराम करने की सलाह दी है। डॉक्टर के अनुसार मुझे पूरी तरह स्वस्थ होने में लगभग पाँच-छह दिन लगेंगे। अत: मैं विद्यालय में आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे 15-9-20_ _ से 19-9-20_ _ तक पाँच दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा।

दिनांक: 15-9-20_ _

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अंशुल गुप्ता

कक्षा 8

9. संपादक को समाचार पत्र में रचना प्रकाशित करने का अनुरोध करते हुए पत्र

240 लोक विहार

पीतमपुरा

पटना

दिनांक : 2 अगस्त 20_ _

सेवा में

संपादक महोदय,

हिंदुस्तान दैनिक समाचार पत्र

पटना

विषय: समाचार-पत्र में लेख के प्रकाशन हेतु

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र 'हिंदुस्तान' का नियमित पाठक हूँ। इस समाचार-पत्र की स्पष्टवादिता और समाचारों की विश्वसनीयता के कारण मैं इसे बहुत पसंद करता हूँ। महोदय बचपन से ही लेखन में मेरी काफी रुचि रही है। कविता, कहानी-लेखन मुझे विशेष प्रिय है। मेरी कुछ रचनाएँ विद्यालय पत्रिका, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, ई-पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी हैं।

मैं चाहता हूँ कि मेरी रचनाएँ आपके समाचार पत्र में भी प्रकाशित हों। आज चारों ओर व्यापक भ्रष्टाचार की समस्याओं को आधार बनाकर मैंने एक लेख लिखा है, जो आपकी सेवा में प्रेषित है। यदि आप इसे अपने समाचार-पत्र के रविवारीय विचार स्तंभ में प्रकाशित करें, तो मैं आपका सदा आभारी रहूँगा।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

सचिन गुलियानी

10. सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

सूरत।

विषय: स्थानांतरण प्रमाण पत्र (टी.सी.) प्रदान करने के संबंध में।

मान्यवर,

विनम्र निवेदन है कि मेरे पिताजी न्याय विभाग में लिपिक पद पर कार्यरत हैं। उनका स्थानांतरण सूरत से अहमदाबाद हो गया है। मुझे भी अपने पिताजी के साथ अहमदाबाद जाना है। अत: श्रीमान जी से निवेदन है कि मुझे विद्यालय से स्थानांतरण पत्र दिलवाने की कृपा करें, ताकि मैं वहाँ राजकीय विद्यालय में प्रवेश लेकर अपना अध्ययन जारी रख सकूँ।

सधन्यवाद!

दिनांक: 25 दिसंबर 20……

आपका आज्ञाकारी शिष्य

रोहित नंदन

कक्षा 8 अ

11. सेवा में,

प्रबंधक महोदय

दिल्ली परिवहन निगम

दिल्ली

विषय– कॉलोनी में बस सेवाओं की अव्यवस्था के संबंध में

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं मोहित पटेल राजबिहार एक्सटेंशन दिल्ली का निवासी हूँ। मैं अपनी कॉलोनी में बस सेवाओं की खराब स्थिति से आपको अवगत कराना चाहता हूँ। राजबिहार एक्सटेंशन में बस सेवा की स्थिति बहुत दयनीय है। बसें अपने निर्धारित समय से काफी देर में आती हैं, जिससे खासकर सुबह काम पर जाने वालों और छात्रों को बहुत परेशानी होती है। हमारी कॉलोनी के लिए पर्याप्त बसें नहीं हैं, जिससे बसों में अधिक भीड़ हो जाती है। बसों की सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता, अधिकांश बसों की सीटें टूटी हुई अथवा उखड़ी हुई हैं, जिससे यात्रियों की यात्रा करते समय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इन अव्यवस्थाओं के कारण, यात्रियों को बहुत कठिनाई हो रही है। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप इन समस्याओं पर ध्यान दें और शीघ्र ही आवश्यक कार्रवाई करें, ताकि कालोनीवासियों को बेहतर बस सेवाएँ मिल सकें।

भवदीय

अरविंद सिंह चौहान

राजबिहार एक्सटेंशन

दिल्ली

दिनांक 12-08-20_ _

अध्याय–21 संवाद लेखन

1. समय के महत्व पर माँ-पुत्र के बीच संवाद

माँ – वंश बेटा, उठो, सुबह हो गई। देखो, सूरज निकल आया है।

वंश – मम्मी थोड़ी देर और सोने दो, छुट्टी का दिन है।

माँ – छुट्टी है तो क्या हुआ? समय तो बीत ही रहा है। समय का महत्व जानो और उसका सदुपयोग करो।

वंश – समय का महत्व, सदुपयोग! मैं समझा नहीं।

माँ – बेटा समय का सही इस्तेमाल करना चाहिए। समय बहुत कीमती है। एक बार जो समय बीत गया, वह लौटकर नहीं आता।

वंश – लेकिन मैं क्या करूँ। अभी तो कुछ काम भी नहीं है।

माँ – काम नहीं है तो भी समय का सदुपयोग कर सकते हो। जैसे– अपनी पसंदीदा पुस्तक पढ़ो या दोस्तों के साथ खेलो या कुछ रचनात्मक कामों में समय लगाओ।

वंश – ठीक है, मम्मी, मैं समझ गया। मैं अब समय व्यर्थ नहीं नष्ट करूँगा।

माँ – बहुत अच्छा। खुश रहो बेटा।

2. अपने आस-पास की स्वच्छता बनाए रखने के लिए छात्रों में परस्पर संवाद।

कबीर – हमारे यहाँ इतनी ज्यादा गंदगी क्यों है ?

कमल – क्योंकि कमल हम परिवेश को स्वच्छ रखने पर समुचित ध्यान नहीं देते हैं।

कबीर – मैं एक नागरिक के रूप में क्या कर सकता हूँ?

कमल – घरेलू कचरे को सड़क के किनारे रखे हुए कचरा पात्रों में डालना चाहिये। हमें अपने घर के सामने के सार्वजनिक मार्ग (सड़क) को साफ रखना चाहिये। हमें प्रत्येक रविवार या अन्य अवकाश के दिन एक घण्टा सामुदायिक सफाई के लिये अर्पित करना चाहिये। हमें सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी करने से बचना चाहिये। हमें दीवारों, पगडंडियों और सड़कों पर थूकने से अपने आप को रोकना चाहिये। हमें खुली जगह में मूत्र व मल त्याग करने से बचना चाहिये।

कबीर – एक नागरिक के रूप में मुझे क्या नहीं करना चाहिये?

कमल – हमें सड़कों पर कूड़ा-करकट नहीं फेंकना चाहिये। हमें बस व रेल के डिब्बों में छिलके व अन्य कचरे से गंदगी नहीं फैलानी चाहिए। हमें प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। हमें दीवारों पर पोस्टर नहीं चिपकाने चाहिये। हमें बचा हुआ भोजन (झूठन) नहीं फेंकना चाहिये।

कबीर – क्या भारत सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए कोई कार्य-योजना शुरू नहीं की है ?

कमल – अरे ! हाँ, भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' शुरू किया है। ग्रामीण व शहरी भारत को आने वाले पाँच वर्षों में साफ बनाना है।

कबीर – यदि हम सब नागरिक इन नियमों का पालन करें तो हम स्वच्छ भारत के लिये योगदान कर सकते हैं।

कमल – हाँ, मैं आशा करता हूँ, विद्यार्थी और नागरिक भारत की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए भरसक प्रयास करेंगे।

3. तंबाकू और धूम्रपान के दुष्प्रभावों पर शिक्षिका और छात्रों के बीच संवाद

शिक्षिका – नमस्ते बच्चो, आज हम तंबाकू और धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

सभी छात्र– जी मैम, बहुत अच्छा।

शिक्षिका – क्या आप जानते हैं कि यह स्वास्थ्य के लिए कितना बुरा है। तम्बाकू और धूम्रपान का हमारे मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे कैंसर जैसी बीमारी भी हो जाती है। फेफड़े खराब हो जाते हैं। इसके अलावा अन्य अनेक रोग शरीर को दुर्बल बना देते हैं।

एक छात्र– इसलिए मैम हमारे स्कूल के बाहर बोर्ड लगा है, जिसमें धूम्रपान न करने की चेतावनी लिखी है।

शिक्षिका– बहुत सही! तो बच्चो हम सभी संकल्प लेते हैं कि भविष्य में हम कभी धूम्रपान तथा तंबाकू का उपयोग नही करेंगे।

एक छात्रा– साथ ही, जो भी ऐसा करता है, उसे इसकी हानियाँ बताकर इसे छोड़ने के लिए कहेंगे।

शिक्षिका – यह तो बहुत अच्छी बात है। हम सब इसका ध्यान रखेंगे।

4. मोबाइल के अधिक इस्तेमाल से परेशान दो मित्रों के बीच संवाद

अमित – मित्र! मुझे लग रहा है कि आजकल मैं मोबाइल फोन का उपयोग अधिक कर रहा हूँ।

रवि – सही कह रहे हो, दोस्त, मुझे भी लगता है कि मोबाइल मुझसे भी अधिक चिपक गया है। बीच-बीच में जब भी टाइम मिलता है, मैं मोबाइल देखने लग जाता हूँ।

अमित – मोबाइल के कारण पढ़ाई और नींद दोनों ही नहीं हो पाती हैं।

रवि – मेरी भी यही स्थिति है, मोबाइल की बजह से मेरा तो सिर भी दर्द करने लगा है।

अमित – मेरी अध्यापिका जी बता रही थीं कि ज्यादा देर तक मोबाइल देखने से चिंता और अवसाद भी हो जाते हैं।

रवि – सही कहा, और हाँ रात को सोने से पहले मोबाइल देखना भी गलत है।

अमित – मुझे लगता है कि हमें मोबाइल के अधिक उपयोग से बचना चाहिए।

रवि – बहुत बढ़िया विचार है। चलो आज से ही शुरू करते हैं।

5. अध्यापक व छात्रों के बीच ग्लोबल वार्मिंग पर संवाद

शिक्षक – आज हम ग्लोबल वार्मिंग के बारे में चर्चा करेंगे। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर सभी को जागरूक होना चाहिए।

छात्र – सर, ग्लोबल वार्मिंग क्या है और यह कैसे होता है?

शिक्षक – आजकल तुम मौसम में बदलाव देख रहे हो, गर्मी बहुत बढ़ गई है। यह ग्लोबल वार्मिंग ही है। इसका प्रमुख कारण वनों की कटाई, कोयला, तेल जैसे ईंधनों का अधिक प्रयोग तथा बढ़ती औद्योगिक गतिविधियाँ हैं।

छात्र – इन सबका क्या प्रभाव होता है?

शिक्षक – इन सब गतिविधियों से ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जो पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रहा है।

छात्र – ग्लोबल वार्मिंग के और क्या दुष्परिणाम हैं?

शिक्षक – मौसम में बदलाव, समुद्र के स्तर का बढ़ना, पारिस्थितिकी असंतुलन तथा मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव आदि अनेक दुष्परिणाम होते हैं।

छात्र – ग्लोबल वार्मिंग से कैसे बचा जा सकता है?

शिक्षक – सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा को बढ़ावा, वृक्षारोपण-संरक्षण, प्लास्टिक पर पाबंदी तथा कचरा रिसायकिल करने जैसे उपाय शामिल हैं।

छात्र – इस महत्वपूर्ण जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद सर जी।

6. क्रिकेट मैच के संबंध में दो मित्रों के बीच संवाद

उत्कृष्ट – सुयश क्या तुमने कल विद्यालय में हुए क्रिकेट मैच को देखा था?

सुयश – हाँ देखा था, क्या शानदार मैच था? तुम्हारी टीम ने बहुत अच्छा खेला।

उत्कृष्ट – हाँ विशु की बल्लेबाजी तो कमाल की थी। उसने एक शतक भी ठोका।

सुयश – एक बार तो लगा कि तुम्हारी टीम लक्ष्य पाने में पिछड़ रही है।

उत्कृष्ट – सही कह रहे हो। दूसरी टीम के दो गेंदबाज सुहेल और मानव ने अपनी गेंद से बल्लेबाजों को बहुत परेशान किया। दोनों ने मिलकर हमारी टीम के पाँच खिलाड़ी पबेलियन भेज दिए।

सुयश – हाँ, वही तो लेकिन मित्र आखिरी ओवर में आपके द्वारा लगाए तीन छक्कों की मदद से आपने टीम को जीत दिला दी।

उत्कृष्ट – सच में, इस मैच में बहुत रोमांच रहा था। चलो अगले मैच की तैयारी करते हैं।

सुयश – ठीक है मित्र, चलता हूँ।

7. डाकिये और बूढ़े व्यक्ति के बीच संवाद

वृद्ध व्यक्ति – क्या आप ही इस क्षेत्र की डाक बाँटते हैं?

डाकिया – जी, बाबूजी बताइए। आपकी क्या समस्या है?

वृद्ध व्यक्ति – मुझे पिछले महीने मुझे मेरा मनीऑर्डर नहीं मिला।

डाकिया – मनीऑर्डर कहाँ से आना था?

वृद्ध व्यक्ति – मेरे पुत्र ने मुझे भेजा था, जो मुझे नहीं मिला।

डाकिया – ओह! यह तो ठीक नहीं है।

वृद्ध व्यक्ति – क्या आप देख सकते हैं कि वह कहाँ है?

डाकिया – ठीक है, मैं पोस्ट आफिस में जाकर पता करता हूँ।

वृद्ध व्यक्ति – जी बहुत-बहुत धन्यवाद।

8. रिक्शा चालक और यात्री के बीच संवाद

यात्री – भैया! चौक बाजार तक चलोगे।

रिक्शा चालक – जी साहब, चलूँगा।

यात्री – कितना किराया लोगे?

रिक्शा चालक – पचास रुपये दे देना साहब।

यात्री – पचास रुपये तो बहुत अधिक हैं। पिछली बार मैं चालीस रुपये में गया था।

रिक्शा चालक – नहीं साहब, महँगाई हर रोज बढ़ रही है। खर्चा भी पूरा नहीं होता। फिर चौक बाजार तक जाने में जाम भी बहुत मिलता है।

यात्री – चलो ठीक है, पैंतालीस रुपये ले लेना।

रिक्शा चालक – ठीक है, साहब, बैठिए। मैं चलता हूँ।

9. छात्रों की बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर संवाद

सुधांशु – मीना कैसी हो, बहुत दिन बाद दिखाई दे रही हो।

मीना – मैं बढ़िया हूँ, तुम बताओ? हाँ, काफी समय हो गया।

सुधांशु – मैं भी ठीक हूँ। लेकिन आजकल विद्यालय के बाहर कुछ अजीब-सा माहौल दिख रहा है।

मीना – क्या मतलब?

सुधांशु – मतलब, कुछ लड़के विद्यालय के बाहर आकर सिगरेट और गुटखा का सेवन करते हैं। लगता है उन्हें नशे की लत लग गई है।

मीना – हाँ, मैंने भी देखा है। यह बहुत दुख की बात है कि हमारी युवा पीढ़ी नशे की तरफ जा रही है।

सुधांशु – बिल्कुल सही कहा। नशा न केवल सेहत के लिए बुरा है, बल्कि यह सामाजिक और मानसिक समस्याएँ भी पैदा करता है।

मीना – मैंने सुना है कि रोहन (एक छात्र) की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही है। वह कक्षा में अक्सर लेट आता है और पढ़ाई में भी मन नहीं लगाता।

सुधांशु – हाँ, और उसका परिवार भी बहुत परेशान है। नशे की आदतें परिवार को भी दुखी कर देती हैं।

मीना – हमें कुछ करना चाहिए। उन्हें समझाना होगा कि नशे से छुटकारा पाना जरूरी है।

सुधांशु – सही कहा। चलो, आज शाम को मिलकर उनसे बात करते हैं और उन्हें सहारा देने की कोशिश करते हैं।

मीना – बिल्कुल। हमें मिलकर इस समस्या से लड़ना होगा और अपने छात्रों को नशे से बचाना होगा।

10. परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने को आधार बनाकर गोविंद तथा हर्ष के मध्य एक काल्पनिक संवाद

गोविंद – अरे हर्ष! कैसे हो? सुना है तुम्हारी परीक्षाएँ आने वाली हैं।

हर्ष – हाँ गोविंद, बस तैयारी कर रहा हूँ। इस बार परीक्षा में अच्छे अंक लाने का लक्ष्य है।

गोविंद – यह तो बहुत अच्छी बात है। तुम्हारी तैयारी कैसी चल रही है?

हर्ष – ठीक-ठाक, बस थोड़ा तनाव है। पिछली बार मेरे अंक उतने अच्छे नहीं थे, जितने मैं चाहता था।

गोविंद – मैं समझता हूँ, चिंता मत करो। मेरे पास एक योजना है।

हर्ष – ओह, सच में। क्या योजना है?

गोविंद – हम हर रोज कुछ घंटे साथ मिलकर पढ़ाई करेंगे। एक-दूसरे को प्रश्न पूछेंगे। जो भी मुश्किल लगेगा, उसे मिलकर सुलझाएँगे।

हर्ष – यह बहुत अच्छा आइडिया है। मुझे लगता है कि यदि हम मिलकर पढ़ाई करेंगे तो इस बार परीक्षा में अच्छे अंक ला सकते हैं।

गोविंद – ठीक है, मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। चलो आज से ही शुरू करते हैं।

हर्ष – हाँ, बिल्कुल, चलो।

11. भारत-पाक क्रिकेट मैच को लेकर मित्रों में संवाद

सजल – अरे, क्या तुम्हें पता है? भारत-पाकिस्तान का मैच होने वाला है। इस बार तो मजा आने वाला है।

सोमेश – हाँ, बिल्कुल! मुझे तो अभी से रोमांच हो रहा है, पिछले मैच में भारत ने पाक को करारी हार का मजा चखाया था। इस बार वह अपनी हार का बदला लेने का प्रयास करेगा।

गर्वित – हाँ, पिछली बार रोहित बहुत अच्छा खेला था, लेकिन इस बार हमें पूरी टीम से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।

विक्रम – मुझे लगता है, इस बार हमारी गेंदबाजी भी बहुत मजबूत है। शमी और बुमराह अच्छे गेंदबाज हैं।

डिसूजा – बिल्कुल, बल्लेबाजी में भी हमारे पास राहुल, कोहली, शुभमन गिल जैसे बल्लेबाज हैं।

विजय – लेकिन हमें पाकिस्तान को भी हल्के में नहीं लेना चाहिए। उस टीम में भी बेहतर खिलाड़ी हैं।

सोमेश – हाँ, यह तो है, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि इस बार भी भारत ही जीतेगा।

सजल – सही है, हम मैदान में पाकिस्तान को धूल चटा देंगे।

अमित – बस, अब तो मैच होने का बेसब्री से इंतजार है।

सजल – चलो, टिकट बुक करते हैं और मैच का आनंद लेंगे।
सोमेश – तो फिर देर किस बात की, चलो टिकट बुक करते हैं।

अध्याय–22 कहानी लेखन

1. ## खरगोश और कछुआ

किसी जंगल में तालाब के किनारे एक खरगोश और एक कछुआ निवास करते थे। उन दोनों में अच्छी मित्रता थी। खरगोश अपनी तेज चाल एवं कछुआ अपनी धीमी चाल के लिए प्रसिद्ध था। खरगोश को अपनी तेज चाल पर अभिमान था। इसी कारण एक दिन वह कछुए की धीमी चाल का मजाक उड़ाने लगा। खरगोश की बात कछुए को बुरी लगी। उसने कहा, "भले ही तुम्हारी चाल तेज है, किंतु यदि दौड़ हुई तो मैं तुम्हें हरा दूँगा।" फिर क्या था, दौड़ प्रारंभ हो गई। खरगोश बहुत तेज दौड़ा और कम समय में ही बहुत दूर निकल गया। इधर कछुआ अपनी धीमी चाल से निरंतर चलता रहा। लगभग एक किलोमीटर की दूरी तय कर खरगोश रुका और पीछे मुड़कर देखा। कछुए का दूर-दूर तक कहीं अता-पता नहीं था। जब खरगोश को कछुआ दिखाई नहीं दिया तो उसने सोचा कि कुछ देर आराम कर लिया जाए। उसके मन में यह बात थी कि जब कछुआ दिखाई देगा तो वह उठकर तेजी से दौड़ लगाएगा और जीत जाएगा। खरगोश रुक गया और आराम करने के चक्कर में उसे नींद आ गई। इधर कछुआ लगातार चलता रहा। खरगोश देर तक सोता रहा। जब उसकी नींद खुली तो कछुआ फिर उसे दूर तक नजर नहीं आया। वह अचानक उठा एवं तेजी से मंजिल की ओर बढ़ने लगा, किंतु वहाँ पहुँचने पर उसके होश उड़ गए। यह क्या! कछुआ तो वहाँ पहले से ही मौजूद था। खरगोश हार चुका था। उस दिन खरगोश का अहंकार टूट गया और उसने कछुए का मजाक उड़ाना बंद कर दिया।

2. ## शेर और खरगोश

एक जंगल में एक शेर रहता था। वह प्रतिदिन बहुत सारे जानवरों को मार डालता था। सभी जानवर इस बात से बहुत चिंतित थे। इस समस्या के निदान के लिए जानवरों का एक प्रतिनिधिमंडल शेर के पास पहुँचा। प्रतिनिधिमंडल के अगुआ ने शेर से विनती की, "महाराज! आप जंगल के राजा हैं और हम आपकी प्रजा। आप प्रतिदिन अनेक जानवरों को मार डालते हैं, उन सबको खा भी नहीं पाते। ऐसी ही स्थिति रही तो एक दिन जंगल में सारे जानवर खत्म हो जाएँगे। महाराज! जब प्रजा ही नहीं रहेगी तो आप राजा कैसे रह पाएँगे?" शेर यह सुनकर कुछ देर चुप रहा, फिर गरज कर बोला, "इसका उपाय क्या है?" अगुआ बोला, "महाराज! आप घर पर ही रहा करें। हम में से कोई एक जानवर प्रतिदिन आपके पास आ जाया करेगा और जब इस प्रकार आपको बिना किसी कष्ट के भोजन प्राप्त हो जाएगा।"

इस समझौते के अनुसार प्रतिदिन एक जानवर शेर के पास जाता और शेर उसे मारकर खा जाता। इसी क्रम में एक दिन एक खरगोश की बारी आई। खरगोश बुद्धिमान था, वह जानबूझकर शेर के पास देर से पहुँचा। शेर बहुत भूखा था, वह दहाड़ता हुआ बोला, "एक तो पिद्दी जैसे हो, तुमसे मेरी भूख नहीं मिटेगी। दूसरे देरी से आए हो। अब मैं जंगल के किसी भी जानवर को जिंदा नहीं छोड़ूँगा।" खरगोश बोला, "महाराज! मैं अकेला नहीं था। आपके भोजन का ध्यान रखते हुए मेरे साथ पाँच खरगोश और थे। किंतु रास्ते में एक अन्य शेर मिल गया। उसने हमसे कहा, "इस जंगल का राजा मैं हूँ और मेरे पाँचों साथियों को मारकर खा गया। मैं किसी तरह जान बचाकर आया हूँ।" शेर दहाड़ा, "मेरे रहते दूसरा कौन होगा? कहाँ है वह? मुझे उसके पास ले चलो।"

खरगोश शेर को एक कुएँ के पास ले गया। वह बोला, "वह शेर इसी गुफा में से निकला था। शायद आपको देखकर इसी में घुस गया है। शेर कुएँ में झाँका तो उसे पानी में अपनी परछाईं दिखाई दी। उस परछाईं को दूसरा शेर समझकर

वह दहाड़ा, कुएँ से अपनी ही आवाज की प्रतिध्वनि सुनाई दी। शेर क्रोध के कारण विवेकशून्य हो गया था। वह परछाईं को दूसरा शेर समझकर उसे मारने के लिए कुएँ में कूद गया और पानी में डूबकर मर गया। इस प्रकार खरगोश की सूझबूझ से जंगल के सभी जानवरों को शेर के आतंक से मुक्ति मिल गई।

3. हाथी और घोड़ा

किसी जंगल में एक घोड़ा रहता था। उसकी जिंदगी बहुत मजे से बीत रही थी क्योंकि जहाँ वह रहता था वहीं घास का एक हरा-भरा मैदान था। उस मैदान की घास बड़ी कोमल व स्वादिष्ट थी। घोड़े को आराम से भोजन मिल जाता था, उसे भोजन के लिए भटकना नहीं पड़ता था। एक दिन उस घास के मैदान में एक हाथी आ धमका। उसे भी वह घास बहुत अच्छी लगी। वह जल्दी-जल्दी घास को चरने लगा। चरने के बाद वह बहुत आनंदित हुआ और घास पर लोट-पोट होने लगा, जिससे सारी घास टूटने लगी। यह देखकर घोड़ा बहुत चिंतित हुआ। उसे अपने भविष्य की चिंता सताने लगी।

हाथी से पार पाना घोड़े के बस की बात नहीं थी। बहुत सोच-विचार के बाद उसने शेर से मदद लेने की सोची। लेकिन फिर उसे डर लगा कि मदद करने के बजाय कहीं शेर उसे ही खा गया तो? अब क्या होगा? अचानक घोड़े को मनुष्य से मदद लेने का विचार आया। घोड़ा मनुष्य के पास गया और उसे अपनी समस्या के बारे में बताया। घोड़े की बात सुनकर मनुष्य ने कहा कि वह हाथी को घास के मैदान से भगा तो देगा किंतु दोबारा आ गया तो? घोड़े को यह बात सही लगी। मनुष्य ने हाथी से छुटकारा पाने के लिए उसे मार डालने की योजना बनाई। घोड़े ने स्वीकृति में सिर हिलाया। मनुष्य ने कहा कि जब वह हाथी को मारने जाएगा तो हाथी भाग जाएगा। अत: घोड़ा अपनी पीठ पर उसे लेकर दौड़े। इस प्रकार हाथी के भागने से पहले ही वह उसके निकट पहुँचकर उसे मार डालेगा। घोड़ा इसके लिए तैयार हो गया। योजना के अनुसार हाथी तो मारा गया किंतु मनुष्य को घोड़े की सवारी करना बहुत अच्छा लगा। उसने घोड़े को अपना दास बनाते हुए पाल लिया। घोड़े को अपने दुश्मन से छुटकारा मिल गया, किंतु वह सदा-सदा के लिए मनुष्य का दास बन गया।

4. चिड़िया और अंडे

किसी जंगल में एक चिड़िया और एक चिड़ा रहते थे। उनका जीवन सुख से बीत रहा था। समय बीतने के साथ-साथ चिड़िया ने अंडे दिए। अंडे दोनों को अत्यंत प्रिय थे। चिड़िया अंडे सेती और चिड़ा भोजन इकट्ठा करता। एक दिन उस पेड़ के पास से होकर एक हाथी गुजरा। शक्ति के घमंड में चूर उस हाथी ने उस पेड़ को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया, जिस पर चिड़िया अंडे से रही थी। चिड़िया के अंडे जमीन पर गिरकर चकनाचूर हो गए। चिड़िया को बहुत दुख हुआ और उसे हाथी पर बहुत क्रोध आया। उसने हाथी से बदला लेने की ठान ली। हाथी जैसे विशाल और शक्तिशाली जानवर के सामने चिड़िया की कोई औकात नहीं थी। उसके लिए हाथी से बदला लेना असंभव था। उसने एक उपाय सोचा। उसी जंगल में उसके तीन साथी और रहते थे। कठफोड़वा, बीणारव मक्खी और मेंढक। चिड़िया उनके पास गई और अपनी दुख भरी कहानी सुनाई। हाथी द्वारा किए गए अत्याचार को जानकर वे भी क्रोध से भर गए। अब सभी मित्र हाथी को सबक सिखाने को तैयार थे। बीणारव मक्खी बोली, "मैं हाथी के कान में भिन्न-भिन्न भिन्नाऊँगी जिससे उसे नींद आ जाएगी।" कठफोड़वा बोला, "नींद आते ही मैं हाथी की आँखें फोड़ दूँगा।"

मेंढक बोला, "उस समय जब हाथी प्यासा होगा तो बहुत गहरे गड्ढे के पास अपने साथियों के साथ मैं टर्र-टर्र करूँगा।" हाथी यह सोचकर गड्ढे की तरफ भागेगा कि वहाँ पानी है और उस गहरे गड्ढे में गिरकर निकल नहीं पाएगा। इस प्रकार हाथी भूख-प्यास से तड़पकर मर जाएगा। योजना के अनुसार सबने मिलकर कार्य किया। हाथी मर गया और इस प्रकार चिड़िया का बदला पूरा हो गया।

5. द्रोणाचार्य और अर्जुन

द्रोणाचार्य विभिन्न अस्त्र-शस्त्र चलाने में निपुण थे। उन्हें धनुर्विद्या में महारत हासिल थी। वह कौरव और पांडवों को अपने आश्रम में शस्त्र विद्या की शिक्षा देते थे। वह अपने शिष्यों को कुशल धनुर्धर बनाना चाहते थे। इसके लिए वह राजकुमारों को धनुर्विद्या के नवीनतम कौशल सिखाते और उनका अभ्यास कराते थे। एक दिन द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा लेने के लिए मिट्टी की एक चिड़िया बनाकर वृक्ष की डाल पर रख दी। उन्होंने सभी राजकुमारों को बुलाकर चिड़िया की आँख को तीर से बेधने का आदेश दिया। सर्वप्रथम दुर्योधन ने निशाना साधा। तभी द्रोणाचार्य ने उससे पूछा कि उसे क्या दिखाई दे रहा है? दुर्योधन ने कहा कि उसे चिड़िया के अतिरिक्त वृक्ष की टहनी, पत्ते और पत्तों के बीच में झाँकता आकाश साफ दिखाई दे रहा है। यह उत्तर सुनकर द्रोणाचार्य ने यह कहते हुए कि अभी उसे बहुत-कुछ सीखना है। उसे वहाँ से हटा दिया। इसी प्रकार बारी-बारी से सभी को लक्ष्य बेधने के लिए बुलाया। परंतु किसी ने भी ऐसा उत्तर नहीं दिया जो द्रोणाचार्य को संतुष्ट कर सके। अंत में अर्जुन से निशाना साधने के लिए कहा गया। निशाना साध लेने पर गुरुजी ने उससे भी वही प्रश्न किया। उसने जवाब दिया कि मुझे केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है। यह सुनकर द्रोणाचार्य ने तीर चलाने का आदेश दिया। तीर चिड़िया की आँख में लगा। द्रोणाचार्य ने प्रशंसा के साथ अर्जुन को पीठ थपथपा कर शाबाशी दी और सभी शिष्यों से कहा कि लक्ष्य को ध्यान में रखकर काम करना ही सफलता की कुंजी है।

6. चरवाहा और गाय

एक गाँव में रामू नाम का एक चरवाहा रहता था। उसके पास एक गाय थी। चरते समय वह गाय एक गड्ढे में गिर गई। रामू ने बहुत प्रयास किया, लेकिन वह गाय को गड्ढे से बाहर नहीं निकाल सका। थक-हारकर वह गाँव लौट आया। गाँव से कुछ लोग रस्सी लेकर गए, लेकिन गाय को नहीं निकाल सके। रामू वहीं गड्ढे के पास बैठ गया और गाँव के लोग वापस लौट आए। थोड़ी देर बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने पास से ही मिट्टी खोदकर गाय के ऊपर डालना शुरू किया। शरीर पर मिट्टी पड़ते ही गाय ने उसे हिलाकर नीचे गिरा दिया। इस प्रकार रामू मिट्टी डालता गया। गाय मिट्टी को गिराकर उस मिट्टी के ऊपर होती जाती, धीरे-धीरे गड्ढा आधा भर चुका था। गाय अब गड्ढे से ऊपर आती जा रही थी। रात हो गई, लेकिन रामू ने हार नहीं मानी। रामू की मेहनत रंग लाई, गड्ढा मिट्टी से भर गया तो गाय उछलकर बाहर आ गई। गाय पाकर रामू बहुत प्रसन्न था। अब गाय भी प्रसन्नता से रामू के साथ-साथ घर को लौट रही थी।

7. बंदर और गौरैया

जंगल में एक पेड़ पर एक गौरैया रहती थी। उसने परिश्रम करके पेड़ पर एक मजबूत और सुंदर घोंसला बनाया, जिसमें वह सुखपूर्वक अपने बच्चों के साथ रहती थी। जाड़े का मौसम था। अचानक एक दिन जोर से बारिश हुई। उसी पेड़ पर एक बंदर था। ठंड का मौसम और ऊपर से बरसात; बंदर परेशान होकर इधर-उधर उछलने-कूदने लगा, लेकिन उसे कहीं छुपने की भी जगह नहीं मिल रही थी। परेशान बंदर एक डाल पर चिपककर बैठ गया। बंदर की दुर्दशा देखकर गौरैया से नहीं रहा गया और बड़े ही दुखी स्वर में उसने बंदर से कहा– बंदर भैया, मैंने आपको कितनी बार समझाया था कि आप अपने लिए एक घर बना लो, लेकिन आपने एक नहीं सुनी। अब कितने परेशान हो रहे हो। बंदर को गौरैया की सीख बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी। खिसियाकर उसने गौरैया का घोंसला तोड़-मोड़कर फेंक दिया। बेचारी गौरैया बंदर को समझाने के कारण अपने घोंसले से हाथ धो बैठी।

8. साँप और किसान

एक गाँव में एक किसान रहता था। गाँव से थोड़ी दूर पर उसका खेत था। जिसमें अनाज उगाकर वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। एक बार ठंड के दिनों में वह अपने खेत पर गया। वहाँ उसने देखा कि ठंड के कारण

एक साँप अकड़ा पड़ा था। ऐसा लग रहा था कि कुछ ही देर में वह मर जाएगा। किसान बहुत दयालु था। वह साँप को ठंड से मरते हुए नहीं देख सकता था। कोई उपाय न देख उसने साँप को उठाकर अपने सीने से चिपका लिया। किसान से गर्मी पाकर साँप को कुछ चेतना आई। धीरे-धीरे गर्मी पाकर साँप सही हो गया। अचानक उसने अपने विषैले दाँतों से किसान को ही काट लिया। थोड़ी ही देर में किसान मर गया।

9. शेर और चूहा

किसी वन में एक शेर रहता था। एक दिन वह अपनी गुफा के सामने एक पेड़ की शीतल छाया में सो रहा था। उसी वृक्ष के नीचे एक चूहा भी जमीन में बिल बनाकर रहता था। चूहा अपने बिल से निकला और शेर के ऊपर चढ़ गया। वह अपने स्वभाव के अनुसार अपने तीखे दाँतों से सिंह के बाल कुतरने लगा। शेर जाग गया। उसने अपने पंजे में चूहे को पकड़ लिया। नींद से जागा क्रोधित शेर चूहे को मारने ही वाला था कि चूहा गिड़गिड़ाया– श्रीमान! हम आपकी प्रजा हैं, आप हमारे राजा हैं, आप मुझे क्षमा कर दीजिए, मेरी जान बख्श दीजिए।

एक दिन मैं इसका बदला अवश्य चुका दूँगा। शेर को चूहे की प्रार्थना पर दया आ गई और उसने उसे छोड़ दिया। कुछ समय पश्चात् वही शेर शिकारियों द्वारा बिछाए गए जाल में फँस गया। शेर ने जाल से मुक्त होने की बहुत कोशिश की किंतु असफल रहा। शेर अपनी बेबसी के कारण जोर-जोर से दहाड़ने लगा। उसकी दहाड़ सुनकर वही चूहा तुरंत वहाँ पहुँचा और उसने अपने तीखे दाँतों से जाल को कुतर दिया। शेर मुक्त हो गया। तब शेर को अनुभव हुआ कि किसी पर किया गया उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता।

10. बातूनी कछुआ और हंस

किसी तालाब में एक कछुआ रहता था। उसी तालाब में दो हंस तैरने के लिए आते थे। धीरे-धीरे कछुए और हंसों के बीच में दोस्ती हो गई। हंस बहुत ज्ञानी भी थे। वे कछुए को अद्‌भुत बातें बताते। ऋषि-मुनियों की कहानियाँ सुनाते। कछुआ मंत्रमुग्ध होकर उनकी बातें सुनता। बाकी तो सब ठीक था पर कछुए को बातों के बीच में टोका-टाकी करने की बहुत बुरी आदत थी। अपने सज्जन स्वभाव के कारण हंस उसकी इस आदत का बुरा नहीं मानते थे। उनकी मित्रता चलती रही।

एक बार भयंकर सूखा पड़ा। उस तालाब का पानी सूखने लगा। एक समय ऐसा भी आया कि तालाब में केवल कीचड़ ही रह गई। कछुआ बड़े संकट में पड़ गया। वहीं पड़ा रहता, तो कछुए का अंत निश्चित था। हंस अपने मित्र पर आए संकट को दूर करने का उपाय सोचने लगे। एक दिन हंसों ने कछुए से कहा, "यहाँ से पचास कोस दूर एक झील है, उसमें काफी पानी है। तुम हमारे साथ वहाँ चलो। वहाँ तुम मजे से रहोगे।" कछुआ रोनी-सी आवाज में बोला, "पचास कोस! इतनी दूर जाने में मुझे महीनों लगेंगे। तब तक तो मैं मर ही जाऊँगा।" हंसों ने अक्ल दौड़ाई और एक तरीका खोज निकाला। वे एक लकड़ी का टुकड़ा उठाकर लाए और बोले, "मित्र! हम दोनों अपनी चोंच से इस लकड़ी के दोनों सिरों को पकड़कर एक साथ उड़ेंगे। तुम इस लकड़ी को बीच में पकड़े रहना। इस प्रकार हम उस झील तक तुम्हें पहुँचा देंगे। उसके बाद तुम्हें कोई चिंता नहीं रहेगी।" उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, "याद रखना, उड़ान के दौरान अपना मुँह न खोलना वरना गिरकर मर जाओगे।" कछुए ने यह बात मान ली। तब लकड़ी पकड़कर हंस उड़ चले। उनके बीच में लकड़ी को मुँह में दबाकर कछुआ लटक गया। एक कस्बे के ऊपर से उड़ रहे थे कि नीचे खड़े लोगों ने आकाश में अद्‌भुत नजारा देखा। बूढ़े, बच्चे, औरतें व जवान सभी ऊपर देखने लगे। उन्होंने ऐसा विचित्र दृश्य देखकर खूब शोर मचाया। कछुए की नजर उन लोगों पर पड़ी। उसे आश्चर्य हुआ कि उन्हें इतने लोग देख रहे हैं। वह अपने मित्रों की चेतावनी भूल गया और चिल्लाया, "देखो, कितने लोग हमें देख रहे हैं।" उसका मुँह खुलते ही वह नीचे गिर गया। नीचे गिरते ही उसकी हड्डी-पसली का भी पता नहीं लगा। हंसों को अपने मित्र की मूर्खता पर बहुत दुख हुआ। हंसों को नया ज्ञान प्राप्त हुआ कि असमय की गई मूर्खता भी मृत्यु का कारण बन जाती है।

अध्याय–23 निबन्ध लेखन

1. सर्व शिक्षा अभियान

प्रस्तावना—'सब पढ़ें सब बढ़ें' नारे को सार्थक करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान का प्रारंभ भारत सरकार द्वारा किया गया है। यह एक प्राथमिक बुनियादी शिक्षा प्रदान करने का अभियान है।

प्रारंभ—सर्व शिक्षा अभियान भारत सरकार द्वारा सन् 2001 में शुरू किया गया था, जिसमें सभी 6-14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाती है।

उद्देश्य—सर्व शिक्षा अभियान का उद्देश्य 2010 तक प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना था। इस अभियान के मुख्य उद्देश्य थे— गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शिक्षा तक सभी बालकों की पहुँच।

लाभ—इस अभियान से अनेक लाभ हुए हैं, जिनसे बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिली है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

अन्य सहायक कार्यक्रम—सर्व शिक्षा अभियान की मुख्य उपलब्धियाँ हैं—बच्चों का स्कूल में नामांकन बढ़ाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, स्कूल छोड़ने की दर कम होना। इसके अतिरिक्त वंचित समूह तक शिक्षा की पहुँच तथा लैंगिक असमानता कम होना इसकी उपलब्धियाँ हैं।

उपसंहार—सर्व शिक्षा अभियान से भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जिससे अधिक बच्चों को स्कूल जाने और बेहतर शिक्षा प्राप्त करने में मदद मिली है।

2. खेलो–कूदो, आगे बढ़ो

प्रस्तावना—खेलों का मनुष्य जीवन में बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि खेलने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है तथा मानसिक विकास होता है।

खेलों की आवश्यकता—खेलों से हमारे अंदर आत्मविश्वास, सहयोग, अनुशासन, साहस, एकता आदि मानवीय गुणों का भी विकास होता है। हमें नए-नए लोगों से मिलने और समझने का अवसर मिलता है। शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेलों की बहुत आवश्यकता है।

विभिन्न प्रकार के खेल—खेलों को मुख्यत: दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है— इनडोर गेम और आउटडोर गेम। घर के अंदर खेले जाने वाले खेल इनडोर गेम कहलाते हैं, जैसे— शतरंज, कैरम, लूडो, साँप-सीढ़ी, टेबिल टेनिस आदि। घर से बाहर खेले जाने वाले खेल आउटडोर गेम कहे जाते हैं। जैसे—क्रिकेट, फुटबॉल, बैडमिंटन, टेनिस, बास्केट बॉल, हॉकी, खो-खो, कबड्डी आदि।

खेलों का महत्व—खेलों का जीवन में बहुत महत्व है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं, बल्कि मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेलों से आत्मविश्वास, टीमवर्क और अनुशासन जैसे जीवनोपयोगी कौशल विकसित होते हैं।

उपसंहार—खेलो-कूदो और आगे बढ़ो। यह एक नारा नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करती है। इसलिए खेलों को अपने जीवन का अनिवार्य हिस्सा बनाएँ और जीवन में आगे बढ़ें।

3. रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य

प्रस्तावना—यातायात के साधनों में रेलगाड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है। यह सस्ती, सुलभ और अधिक सुरक्षित सवारी है। रेलवे स्टेशन, जहाँ रेलगाड़ी रुकती है, यहाँ बने चबूतरों को रेलवे प्लेटफार्म कहते हैं।

रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य—एक बार मैं अपने परिवार के साथ जयपुर जाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचा, वहाँ प्लेटफॉर्म का दृश्य बहुत ही हलचल से भरा था। प्लेटफॉर्म पर गाड़ी में चढ़ने-उतरने वालों, अपने संबंधियों अथवा मित्रों की विदाई तथा अगवानी करने वालों की भीड़ लगी हुई थी। प्लेटफॉर्म पर भीड़ का बहुत शोर-शराबा था। इसके अतिरिक्त सामान उठाने, गाड़ी में रखने, उतारने वाले कुली भाग-दौड़ कर रहे थे। एक-दो भिखारी भी प्लेटफॉर्म पर दिखाई दे रहे थे, खाने-पीने के सामान की तथा दैनिक उपयोग की चीजें तथा पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों की अनेक स्टाल लगी हुई थीं। कुछ लोग प्लेटफॉर्म पर बनी बैंचों पर बैठे थे, कुछ चहलकदमी कर रहे थे।

गाड़ी का आगमन—कुछ ही देर में जयपुर जाने वाली गाड़ी आने की घोषणा हुई। लोगों में चहल-पहल बढ़ गई।

निर्धारित समय पर रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पर आ गई। यात्री डिब्बे में चढ़ने के लिए रेलगाड़ी की ओर लपके, उधर उतरने वाले यात्री भी डिब्बे से उतरने लगे। चढ़ने और उतरने वाले धक्का–मुक्की करने लगे। हम भी निर्धारित डिब्बे पर पहुँचे और थोड़ी मशक्कत के बाद अपनी सीट पर जाकर बैठ गए।

उपसंहार—रेलवे प्लेटफॉर्म का दृश्य बड़ा ही रोचक और आकर्षक होता है। यहाँ यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक रहती है। कभी भीड़ हल्की होती है तो कभी रेलगाड़ी आने पर फिर भीड़ बढ़ जाती है। फिर से यात्रियों के चढ़ने–उतरने का दृश्य आरंभ हो जाता है।

4. बाढ़ का दृश्य

प्रस्तावना—जब धरती को पानी की प्यास लगती है, तब तो पानी की बूँद भी नहीं बरसती और कभी पानी इतना बरसता है कि नदियाँ उसे अपने किनारों के आँचल में समेट नहीं पातीं और यही पानी बाढ़ के रूप में अभिशाप बन जाता है।

बड़ोदरा में बाढ़—भारी बारिश के कारण विश्वामित्री नदी उफान पर बहने लगी। लगातार बारिश से बड़ोदरा में बाढ़ के हालत बन गए। बाढ़-बारिश के चलते कई लोगों की मौत हो गई, हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया। शहर के दर्जन भर से ज्यादा इलाकों में 4 से 5 फुट पानी भर गया।

बाढ़ में घिरे जीव-जन्तु—बाढ़ के कारण जीव–जन्तु खासकर पालतू मवेशी—गाय, भैंस, अन्य कुत्ते आदि जानवर पूरी तरह फँस गए। इसके अलावा साँप, कछुए और साही जैसे जानवर भी बाढ़ में घिर गए थे। अनेक जीव–जन्तु इस बाढ़ में घिरकर मर गए।

कालोनियों में मगरमच्छ—विश्वामित्री नदी जो बड़ोदरा से होकर गुजरती है, मगरमच्छों का घर है और बाढ़ के कारण ये नदी से बाहर निकलकर शहर की कालोनियों में फैल गए, जिनमें से कुछ 14 फीट तक लंबे थे। जिससे स्थानीय लोगों में दहशत फैल गई। वन विभाग ने कई मगरमच्छों को नदी में पहुँचाया।

विभीषिका—बाढ़ के कारण बड़ोदरा में जान–माल की बहुत हानि हुई, बाढ़ की विभीषिका का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि लोग कई हफ्तों तक सामान्य स्थिति में नहीं आ पाए। बाढ़ के बाद फैली गंदगी, उससे उत्पन्न बीमारियों ने इस विभीषिका को और बढ़ा दिया।

उपसंहार—बाढ़ के कारण न केवल इंसानों को बल्कि जानवरों को भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमारे देश में प्रत्येक वर्ष कहीं–न–कहीं बाढ़ के कारण जान–माल की हानि होती रहती है। बाढ़ रोकने के लिए सुनियोजित प्रयास और प्रबंध किए जाएँ, ताकि बाढ़ की विभीषिका से बचा जा सके।

अध्याय–24 मौखिक अभिव्यक्ति

छात्र स्वयं करें और समझें।

अध्याय–25 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बन्धित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उससे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरिक्षत हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।
2. (क) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।
   (ख) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।
3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरी रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।
4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियाँ को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।

5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।
6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।
7. (क) 101 पर। (ख) 108 पर। (ग) 100 पर। (घ) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।
8. (क) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है। (ख) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।
9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलतः वाहन से नियंत्रण हटते ही प्रायः दुर्घटना हो जाती है। अतः वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।
10. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्रायः वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रूकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।
11. पैदल यात्रा परिपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसी जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।
12. विद्यालय जाते सयम और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं—
(i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू-टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।
13. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—
1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।
3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।
5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। बाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।
14. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ-बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।
15. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए। जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।
2. डिवाइडर अथवा रेलिंग्स के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हों तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए। यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।
4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।
5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए। शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

16. त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
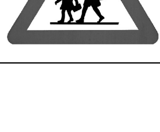	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अतः गति धीमी रखें।

	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे जेब्रा क्रासिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अत: वाहन की गति नियंत्रित करें।

17. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।
18. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझायेंगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है। जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए। क्योंकि कल पानी नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जायेगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।
19. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं। ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जायगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—
    1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।
    2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।
20. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।
21. बाजार से विभिन्न वस्तुओं/सब्जियों/फलों आदि को पॉलिथीन बैग में लाना उचित नहीं है। इसके लिए हमें घर से कपड़े का थैला ले जाना चाहिए। पॉलिथीन का अपघटन नहीं हो पाता इस कारण मृदा के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव अन्नोत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा जानवर आदि भी इसे खा जाते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।
22. बिजली बचाने के लिए हम अपने स्तर से निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—
    (क) जब आवश्यक हो तभी बल्ब, पंखे आदि जलाएँ/चलाएँ उन्हें अनावश्यक जलता हुआ/चलता हुआ न छोड़ें।
    (ख) यदि सीमित रोशनी की आवश्यकता हो तो अधिक बोल्ट/ वाट के बल्ब का प्रयोग न करें।
    (ग) बिजली का अपव्यय न हो इस हेतु ISI मार्क उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए अभिभावक से कहेंगे।
23. हमें भलीभाँति मालूम है कि स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण अनिवार्य है। इसे स्वच्छ रखना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसकी स्वच्छता हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—
    (1) एक पेड़ लगाकर उसे तैयार करने का संकल्प लें।
    (2) न तो जल को दूषित करें, न करने दें।
    (3) विवाह व अन्य समारोहों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण होता है। इस हेतु लोगों को जागरूक करेंगे।
    (4) कूड़ा-कचरे को निर्धारित स्थान पर ही इकट्ठा करने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।
24. स्वच्छ भारत अभियान में हम अपने स्तर से यह योगदान दे सकते हैं कि विद्यालय/गाँव के साथियों के साथ अलग-अलग टोली बनाएँ और आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करें। कूड़े-कचरे को निर्धारित स्थान पर एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण करवाएँ। इस तरह किया गया छोटा-छोटा प्रयास अन्ततोगत्वा बहुत बड़ी सफलता अर्जित करेगा।
25. 'नमामि गंगे' योजना केन्द्र सरकार द्वारा गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत नदी के ऊपरी सतह की सफाई से लेकर बहते हुए ठोस कचरे की समस्या को हल करने, घाटों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण का लक्ष्य शामिल है। यद्यपि गंगा नदी की सफाई इसके सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व और विभिन्न उपयोगों के कारण बहुत कठिन है किन्तु बेहतर भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने ही पड़ेंगे।
26. ई-प्रदूषण—इलेक्ट्रानिक उपकरणों (मोबाइल फोन, टी.वी., रेफ्रिजरेटर आदि) के कचरे से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण, ई-प्रदूषण कहलाता है। इस कचरे के कारण पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें बनती हैं जो स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इससे बचने के लिए ई-कचरे का वैज्ञानिक प्रबन्धन आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे यह विकराल रूप धारण कर लेगा।